प्रस्तुत जीवनगाथाके
लेखक

***

## श्री ऋषि जैमिनी कौशिक 'बरुआ'

प्रस्तुत जीवनगाथा 'मैं अपने मारवाड़ीसमाजको प्यार करताहूँ' के सप्तम खंडसे उद्धृत की जा रही है. पाठकोंकी जानकारीकेलिये यहांपर उल्लेख करदियाजायेकि १९६१ से एक बृहद् योजनाको कार्यान्वितकरतेहुए, बरुआजीने सारेदेशमें फैलते हुए मारवाड़ीसमाजके विगत २०००-३००० वर्षोंपर शोध-अनुसंधानका धाराधारक्रम बनाकररखाहै. अभीतक उक्तग्रंथके ६ खंड प्रकाशितहोचुके हैं. अब सातवां खंडभी छपकर तैयारहै, लेकिन प्रस्तुत पाठ्यसामग्री इस जीवनीके चरितनायकके परिचित बन्धुबांधवोंके उपयोगार्थ अलगसे प्रचारार्थ लघु पुस्तिकाकेरूपमें तैयारकीगयीहै. पाठक यदि इस चरितनायकसे संबंधित कुछ नई जानकारियां निम्नपतेपर हमें प्रेषितकरेंगे, तो उसे दूसरे संस्करणमें संलग्नकरलियाजायेगा. पाठकोंके सभी प्रकार के सुझावों का हम स्वागतकरतेहैं.

***

जैमिनी पब्लिकेशन्स
११६:१, महात्मा गांधी रोड, कलकत्ता-७.
फोन : ३४-६९४४

# मांगलिक घड़ियोंमें राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति का आशीर्वचन

उपराष्ट्रपति, भारत
नई देहली
VICE-PRESIDENT
INDIA
NEW DELHI

April 20, 1971

Dear Shri Deoralia,

I thank you for your kind invitation to attend the wedding ceremony of your niece Leela with Mahendra to be performed on the 27th April, 1971 at Roop Nagar, Delhi. On account of certain previously fixed programme to be fulfilled in Himachal Pradesh at that time, however, I regret, I have to deny myself the pleasure of personally blessing the bride and the bridegroom.

Please accept my congratulations on the auspicious occasion and convey my blessings to the bride and the bridegroom.

Yours sincerely,
(G. S. Pathak)

Padmashri Phool Chand Deoralia,
7/31, Roop Nagar,
Delhi-7

सत्यमेव जयते

राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली-4.
RASHTRAPATI BHAVAN,
NEW DELHI-4.

April 23, 1971.

Dear Shri Deoralia,

Thank you for your invitation to attend the marriage of your daughter Leela with Mahendra. Shrimati Giri and I send our choicest blessings to the young couple and wish them long life, happiness and prosperity.

Yours sincerely,
V. V. Giri

Shri Sri Niwas Deoralia,
7/31, Roop Nagar,
Delhi-7.

जब श्रीनिवासजी अग्रवाल की सुकन्या लीलाका विवाह रचाया गया, नई दिल्लीके सभी राष्ट्रीय नेताओं ने मुक्तहृदयसे बधाई संदेश भेजेथे. इस अवसरपर राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति महोदयोंने भी अपनी मंगल-कामनायें प्रेरितकीथीं.

कोई हजार सूरज तपावै, सिरसुतीकी धार सूखै नाहीं, सूखै नाहीं,
हजार तैमूर-तुगलक आवै, हरियाणाकी बहार सूखै नाहीं, सूखै नाहीं

***

**श्री श्रीनिवास अग्रवाल**

हरियाणाकी धरतीकी चट्टानी आत्मा
का विनय भरा एक प्रतिनिधि !

***

**कोई हजार सूरज तपावै, सिरसुतीकी धार सूखै नाहीं, सूखै नाहीं**
**कोई हजार तैमूर तुगलक आवै, हरियाणाकी बहार सूखै नाहीं**
**सूखै नाहीं . . .**

## श्री श्रीनिवास अग्रवाल

हरियाणाकी धरतीकी चट्टानी आत्माका
विनयभरा एक प्रतिनिधि पुरुष !

**प्रथम अध्याय**

# देवराला ग्राम का माहात्य-इतिहास

## १. हरियाणाके तीर्थ नदीनालोंके किनारे नहीं, छोटेछोटे गांवोंमें विराजमान हैं

भाई श्रीनिवासजी अग्रवाल भाई फूलचन्दजी देवरालियाके कनिष्ठ भ्राताहैं. जब फूलचन्दजीकी एक लघु जीवनगाथा हमने चतुर्थ खंडमें प्रकाशितकी और उसका एक 'ऑफप्रिंट' आसपासके मित्रोंमें वितरितकरवाया, तो बहुतसे मित्रोंका यह तकाजा आयाकि तृप्तिनहीं हुई, हरियाणाके कुछ और वरद् पुत्रोंका परिचय प्रकाशितकीजिये. यह कैसा आश्चर्यहैकि हरियाणाकी धरतीने अभीतक एकभी लोकप्रिय राजनीतिज्ञ पदा नहीं कियाहै. इसलिए जब हमने वरद् पुत्रोंकी तलाशमें दूसरा नाम खोजना शुरूही कियाथाकि हमारी दृष्टि फूलचन्दजी देवरालियाके कनिष्ठ भ्राताकी बलिष्ठ कद्दावर मूर्तिपर इसतरह टिकगयी, जैसे मधुकी प्यासमें भटकते बटोहीकी आँख किसी शहदके छत्तेपर जाकर अटकगयीहो ! और, जब हम भाई श्रीनिवासजीके निकट आये, तो हमें लगाकि वे सचमुचही शहदके ऐसे लम्बेचौड़े छत्ते हैं, कि इतना बड़ा छत्ता हमने देखाही नहीं था. चार-पांच भेंट हुई, हमने तयकरलियाकि हरियाणाके वरद् पुत्रोंकी सूचीमें उनका नाम दूसरा रहेगा. और, जल्दीही इस ग्रंथश्रृंखलाके किसी खंडमें श्रीनिवासजीकी सचित्र गाथा प्रकाशितकीजायेगी. लेकिन श्रीनिवासजी हमारी बात सुनतेही 'इभी-ठहरो', 'इभी-ठहरो' कहकर टालतेगये और सन् १९७३ गया, १९७४ भी पूराकापूरा हाथसे निकल गया.

आखिर श्रीनिवासजीने एक बात हमारी मानी. हमारी इसबातको उन्होंने पसंदकियाकि हम हरियाणाका एक तीर्थ करें, वे साथरहें, भाई फूलचन्दजी साथरहें. और, यह तीर्थ हम ग्राम देवरालाका करें. वेभी इसबातपर सहमतनिकलेकि गंगोत्रीसे लेकर गंगा-सागरतक गंगाके सारेही तीर्थ उस महामाईने अपने तट-किनारेपर बैठारखेहैं, अपनी गोदीमें समेटे बैठीहै. लेकिन हरियाणाकी धरतीने अपनेसारे तीरथ अपने एक एक गांवमें फैलादियेहैं. उनकी चरणरजको माथेपर लगानेसेही तीरथ होजाताहै !

जब हम भाई श्रीनिवासजीकेसाथ देवराला ग्राम गये, तो एक साखी याद आगयी :

**राव तुलाराम छोड़ गियोथो एक खाँडो !**
**जो पावै नर पालैगो अशरफियों को भांडो ! !**

सन् १८५७ के प्रथम स्वतंत्रता-आन्दोलनमें अपनी शहादतदेतेहुए राव तुलारामने जब नसीबपुर (नारनौलके निकट) ग़दर-कालका अंतिम कुरुक्षेत्र रचाया और शत्रुपक्षके भारीदबावकेकारण लड़ाईके मैदानमें पैर टिकाकर न रखसका, तो वहाँसे पलायनकरगया. वहाँसे वह भारतभूमिका त्याग सदासर्वदाकेलिए करनेपरभी बाध्यहुआ. किन्तु लोकजगतने उसके पलायनको पलायन नहीं माना. यही स्वीकारकियाकि वह अपना खांडा इसलिए अपने पीछे छोड़करगयाहै, ताकि उसकेपीछेसे हरियाणाका कोई सपूत उसे सम्हालकर रखे और पीछेसे देशको गुलामबनानेवाले शत्रुके लोहेको ठंडाकरके, अपना लोहाही गरमरखे. ऐसे सपूतको ही राव तुलारामकी विरासतमें रखेहुए अशर्फियोंसे भरे देग (बड़े कलश, भांडे) प्राप्तहोंगे . . .

जब हम देवराला पहुँचेहीथेकि हमें देवारालाकी पुरानी प्राचीन कहानी सुनतेसुनते यह तथ्य तत्कालही हाथलगगयाकि राव तुला-रामका खांडातो भाई श्रीनिवासजी देवरालियाके आदि पूर्वज रूड़ारामजीने सन् १८०० के आसपासही हाथमें उठालियाथा; उन्होंनेही जैसे उसकी धार तेजकीथी, जो उनकेबाद, राव तुलारामको कामदेकर गयी ! रावतुलारामकी यह कहानी स्वतंत्रताके आन्दोलनमें बहुत विस्तारसे मिलतीहै. भाई श्रीनिवासजीके पूर्वज कांधेपर खांडा रखनेका शौर्य निभाकर गये और अपने पुत्र-पौत्रोंको शौर्य-परम्परासे जीवन जीनेका अमृत-मंत्र देगये. वही मंत्र भाई श्रीनिवासजी अग्रवालमें अपने ऐसे कार्यकलाप फलीभूतकररहाहैकि हृदयमें गर्वका सागरही लहरानेलगताहै.

*** *** ***

## विराट बुभुक्षाका प्रदेश, हजारों मकानोंपर पड़ेहुए बन्द ताले

हरियाणामें प्रवेश केवल सड़कमार्ग द्वाराही संभव होपाताहै. रेल द्वारा हरियाणा न समझा जासकताहै, न हरियाणाकी आत्माके दर्शनही कियेजासकतेहैं. सड़कमार्ग द्वारा हम दिल्लीसे भिवानीके लिए प्रस्थानकरतेहैं. दिल्ली चाहे आज नईदिल्लीके नामसे जानीजाये, चाहे भूतकालमें इन्द्रप्रस्थके नामसे जानीगयीहो, या मायापुरी (पृथ्वीराज चौहानके जमानेमें इसका यही नामथा, जैनग्रंथोंसे यही पता चलता है!) केनामसे, यह सदाही हरियाणाकी भूमिपर नगीनेकीतरह शोभितरहनेवाली पुरीरहीहै. मुगलकालके अधःपतनतक दिल्ली हृदय-विहीन वृद्धा साम्राज्ञी भर रहगयीथी. अब भारतकी आजादीकेबादसे, देशकी आधुनिक राजधानीहोनेकेकारण, सारे देशकी दौलत यहीं सिमटकर चलीआईहै. देशके अन्य नगरोंमें दिल्लीके इस धनसंचयका अनिष्टकर प्रभाव साफसाफ देखाजासकताहै. ब्रिटिससत्ताके प्रारंभ-कालसेही यह दिल्ली पुरी हरियाणा-राजस्थानके महादुर्भाग्यकी प्रतीक होचलीथी. १८ वीं सदीमें, १९वीं सदीमें और २० वीं सदीमें यह दिल्ली बराबरही हरियाणाकी महादरिद्रताकेसाथ आजतक न्यायकरनेका होश नहीं पासकीहै. पिछली दो सदियोंमें बंगालसे आनेवाली मानसूनने यदि राजस्थानको सूखा और अकालकी मारदेतेहुए विराट बुभुक्षा दीहै, तो हरियाणामें इस मानसूनने महानाशकी नारकीय यंत्रणा-ओंकी बाढ़सी फैलादीहै. इस दिल्लीने राजनीतिक स्तरपर हरियाणाको पहले उत्तरपश्चिम सीमांतके पैरोंकी जूतियां बनाकर रखा और नौर्थ वैस्ट फ्रेंटियर प्राविंसमें इसे चिपकादिया. फिर पंजाबमें इसतरह इसे जोतदिया, जैसेतो बलिका बकरा यही रहेगा, इसकी कीमतपर पंजाब अपनेको मुटियातारहे. यहीकारणहैकि दिल्लीकी राजनीतिक विभीषिकाओंसे त्रस्तहोकर यहाँके धरतीपुत्र हर दस साल बाद आने-वाले अकालोंमें मरखपगये या यहाँके लाखोंलाख धरतीपुत्र हरियाणाको खालीकर जमुनापार चलेगये. और, जो यहाँके बिपार-बिणजके धणीथे, वे ऐसे परदेशोंमें चलेगये, कि जहाँसे लौटनेका संस्कार फिर उनके वंशोंमें सुरक्षित नहीं रहगया. यह कैसा महाप्रकोपहैकि दिल्लीकी राजनीतिने आजभी ऐसाही अभिशाप फैलारखाहैकि हरियाणाके भागेहुए धरतीपुत्र या बिणज-बिपारी आजभी अपने घरोंको लौटनेकेलिए, अपने हरियाणामें वापस आकर रहनेकेलिए, यहीं आकर बसजाकेलिए आश्वस्त नहीं होपायेहैं. ऐसेही दीर्घ, ढाईसौ वर्ष पर्यंतचलनेवाले, दीर्घ अन्यायकेकारण हरियाणाके कई हजार मकान तालोंमें बन्दपड़ेहुएहैं. कुछही सैकड़ा परिवार, कुछदिनोंकेलिए, कुछ सप्ताहोंकेलिए, कुछ महीनोंकेलिए, अपने इन पैतृक मकानोंमें लौटतेहैं, उनके मनकी भूख इससे शान्तहोतीहै. लेकिन यहाँ पहुँचकर वे नौ दिनभी नहीं रहतेकि उनका मन उचटनेलगताहै, क्योंकि मन लगानेवाला स्निग्ध वातावरण दिल्लीकी कुटिला राजनीतिने यहाँ पिछले २००-२५० वर्षोंसे रहने नहीं दियाहै! आजभी जबकि हम पूर्ण आजादहैं, और हरियाणाका नया राज्य प्रसवितहोचुकाहै, और उसमें हमारी जनप्रतिनिधि सरकारहै, एकभीतो वह बन्द ताला हरियाणामें नहीं खुलपायाहै, जिसे आजसे दो या तीन पीढ़ी पहलेके पूर्वज अपने जीवनास्तित्वकी रक्षाकेलिए बन्दकरके गयेथे! न ही, ऐसा सौभाग्य अवतरित होपायाहैकि ये बन्द ताले सदा स्थायी रूपसे खुलेरहें और यहाँकी संतति हरियाणाकीधरती के संस्कारसे परिपोषितहोकर, यहाँकी धरतीके सत्यपुत्रबननेका नया सिलसिला शुरूकरे.

यदि किसी पैतृक मकानका ताला वर्षभरमें सिर्फ आठ-दस रोजकेलिएही खुलपाये, तो यह क्या इस हरियाणा राज्यकेलिए एक अभिशाप नहींहै? अभी हम शामके सात बजे भाई फूलचन्दजी देवरालिया और श्रीनिवासजीकेसाथ देवरालामें पहुँचेहैं, लेकिन परसों यहाँसे वापस प्रस्थानकरेंगे, यही कार्यक्रम लेकर यहाँ आयेहैं. इन दो दिनोंमेंतो इस विशाल दर्शनीय हवेलीमें ठीकतरहसे झाड़ूभी नहीं लगपायेगी! और फिर दो दिनोंकेबाद इस पैतृक मकानको पुनः तालालगाकर, उसे बन्दकरके, ये दोनों भाई कलकत्ताकेलिए प्रस्थानकरदेंगे. कितना असह्य अन्यायहै हरियाणाकी इस इतिहास-जीवी पुण्य पवित्र भूमिकेलिए? इसके हजारोंहजार धरतीपुत्र मालवा, पंजाब, मध्यप्रदेश, बम्बई प्रदेश, केरल, तमिलनाडु, गुजरात, दिल्ली, पंजाब, उत्तरप्रदेश, बिहार, संथाल परगना, धनबाद-झरिया, पश्चिम बंगाल और आसाममें फैलेहुएहैं. भला हरियाणाके इन धरतीपुत्रोंको, जो परदेशोंमें बसेहुएहैं, अपनेही पैतृक मकानोंमें रहकर असीम सुख और सुहासका भोग क्यों नहीं मिलता?

*** *** ***

## हरियाणाके विगत १०० वर्षोंका दुर्भाग्य, अन्नबहुल कृषिके आकाश-कुसुम कब धरतीपर उतरेंगे?

दिल्लीसे राजस्थानकीतरफ जो सड़क-मार्गहै, उसपर आगेबढ़तेहुए, हरियाणाका प्रवेशद्वार बहादुरगढ़में मिलताहै. बहादुरगढ़का एक शौर्य-इतिहास बहुत प्राचीनकालसे चलाआरहाहै, मुगलकालमें इसका शौर्य-चमत्कार धूलमिट्टीकरनेकी बहुत चेष्टाकीगयीथी. बहादुर-गढ़से हरियाणाका भूभाग शुरूहोजाताहै. हरियाणाकी एक बांह जैसे दिल्ली और राजस्थानके बीचमें अपनी हथेली पसारेबैठीहै. बहादुर-गढ़से भिवानीतक सारा प्रदेश, सड़कके दोनोंओर लहलहातीहुई खेतीसे बहुप्रसू बनेहुए खेतोंसे पाट पड़ाहुआहै. जबभी सड़क-मार्ग द्वारा मैंने दिल्लीसे हरियाणाके प्रदेशको लांघतेहुए राजस्थानमें प्रवेशकियाहै, बारबार मेरे मनमें यह प्रश्न रहरहकर टकरायाहैकि हरियाणा जैसे खुशहाल प्रदेशमें रहनेवाले अग्रवालोंके पूर्वजोंको आजसे १,०००-१,२०० वर्षपहले क्या आवश्यकता आगयीथीकि वे हरियाणाजैसे खेतिहर प्रदेशसेउठकर राजस्थान जैसे शुष्क मरुराशिसेतप्त प्रदेशमें अपने दुर्भाग्यको खोजतेहुए निकलगयेथे? जिससमय अग्रवालोंने ७ वीं-८ वीं सदीमें हरियाणासे उठकर राजस्थानमें प्रवेशकियाथा, उससमय राजस्थानमें राजनीतिकी दृष्टिसेभी एक शुष्क बालुमय राजनीतिकाही दौरदौराथा! राजपूतोंका नया नया प्रसव हुआथा और पैदाहोतेही ये तलवार उठाकर अनाचार-उच्छृंखलता फैलानेलगेथे. पूर्वमध्यकालमें (सन् ७०१ से ९०० तक), मध्यकालमें (सन् ९०१ से १६०० तक), और मध्यकालोत्तर इतिहासमें (सन् १६०१ से १८०० तक)—इन

समग्र दौरदौरेमें राजस्थानमें आयेहुए अग्रवालोंका एकदिनभी ऐसा नहीं गयाकि इन्होंने किसीप्रकारका सुखसौभाग्य पायाहो. राजस्थानमें रहकर यदि ये दीर्घजीवी बनेरहसके, तो इनकी अमृतनाभिमें जो पैतृक गुण सजीवरहेथे, उनकेही कारण; पर उधर, हरियाणामें अग्रवालोंके जो वंश मूलरूपसे अपनीही युगोंप्राचीन पैतृक भूमिमें स्थिररहगयेथे, उनकीभी दुर्दशा कम बदतर नहींथी. उन्हें पश्चिमी खैबर दर्रेसे होनेवाले आक्रामक संघातोंका दाहक-मारक अभिशाप भोगनापड़रहाथा. लेकिन वेभी पूरीतरह होम नहीं होपाये, जीवितरहसके. ११वीं सदीसे-लेकर १६वींसदीतक हरियाणापर सर्वनाशकी मृत्युलीला कमसे कम १०० बारसे अधिक रचीगयी, फिरभी अन्य जातीय तत्वोंकेसाथ अग्रवालोंके परिवारभी दीर्घजीवी बनेरहनेका वरदान भोगतेरहे—अवश्य घनघोर गरीबी ओढ़कर !

इन्हीं विचारोंमें उलझेहुए मैं लालायित नेत्रोंसे सड़कके दोनोंओरके खेतोंकी अन्न-बहुल हरियाली को देखनेलगताहूँ. . .हम कार द्वारा दिल्लीसे देवरालाजारहेहैं. . .कि चारोंओरसे बादल उमड़घुमड़कर आगयेहैं. . .मानो मेरा अभिनंदनकरनेलगेहैंकि हरियाणाका एक इतिहासकार आयाहै, उसका वे प्रगाढ़ भुजबंधनकर अभिनंदनकरेंगे. . .कि झमझमाझम बारिशने सारे व्योमको, चारोंओरके खेतोंको, आगेपीछे मीलों लम्बी सड़कको और हमारी कारको अपने आक्रोशकी बाँहोंमें समेटलियाहै. जल्दीही मूसलाधार बारिशकी अंधकारी बौछार अपने घटा-टोपसे हमें इसतरह ढँकलेतीहैकि हम दसबीस गज आगे क्याहै, यह नहीं देखसकते. काश, अमृतसिंचन जैसा वर्षाका यह आवेग हर वर्ष इसीतरह हरियाणामें सौभाग्यबनकर आतारहे और महाभारतकालके 'बहुधान्यकः प्रदेश'की उक्तिको चरितार्थकरतेहुए पुनः हरियाणाको अपनी महामहिम आसंदीपर प्रतिष्ठितकरदे.

पर केवल हरियाणाही अकालके दुर्भाग्यका पात्र नहीं बनायागयाहै इस वर्षाके हाथों, इससे आगे जो राजस्थान फैलाहुआहै, वहाँतक जातेजातेतो यह मानसून १०० मीलपहलेही अपना मार्ग परिवर्तितकरलेतीहै और राजस्थानको तप्त-शुष्कही बनारहनेदेताहै. क्यों बनारहनेदेताहै, यह प्रश्न बड़ा विकटहै, अनुत्तरित रहाहै. लेकिन हम क्या इसका उत्तर नहीं ढूंढसकते ? क्या इस दैवी प्रकोप को मनुष्य-शक्तिके बलपर एक स्थायी वरदान बनाहुआ नहीं रखसकते ? यह ठीकहैकि मुगल सम्राटोंने हरियाणा और राजस्थानके अकालोंकी समस्याका उत्तर निकालना उचित नहीं समझाहोगा. यह भी सचहैकि अंग्रेजभी इन दोनों प्रदेशोंकी इस अभिशप्त प्रकृतिप्रकोप-लीलाका उत्तर ढूंढनेमें उदासीन रहेहोंगे. पर हम आंखखोलकर इस गहन मानवीय समस्याकेप्रति क्यों मुखापेक्षी नहीं होपाते ?

जबतककि मैं इस पहलूपर सोचूँ-विचारूँ. . .कि कारके शीशोंसे टपकतीहुई बूंदोंसे अन्दर बैठा-बैठा भीगनेलगताहूँ. अवश्य कार अपनी फुल स्पीडपर आगेबढ़रहीहै, लेकिन भयंकर बारिशने हमें अन्दरभी भिगोना शुरूकरदियाहै. बहादुरगढ़, रोहतक, कलानौर होतेहुए हम भिवानी आपहुंचतेहैं. भिवानीतक दिल्लीसे आनेवाली सड़क सचमुचही 'हाईवे' है, अर्थात् राजमार्गके तुल्य आनन्ददायिनीहै, पक्की कोलतारकी सड़कहै. लेकिन राजस्थानमें प्रवेशकरतेही सड़क अपना रूप विवर्तितकरलेतीहै. उसमें ऊबड़खाबड़ता प्रकटहोनेलगतीहै. पक्की कोलतारकीभी नहीं रहजाती. मानो हाथ उठाकर कहरहीहै आनेवालोंसेकि होशियार, अब आगे दुर्भाग्य-प्रदेशमें आपलोग प्रवेश-करेंगे ! इसलिए यहाँसे आगे सड़क भी दुर्भाग्यकी प्रतीकिनीही मिलेगी ! !

## शेखावाटीके रेगिस्तानका रंग और 'अनंग'

हमारा गंतव्य स्थान देवरालाहै. हम राजस्थानमें प्रवेश न कर, अब हरियाणा और राजस्थानके सीमान्तप्रदेशमें दक्षिणकी-तरफ घूमजायेंगे. पर भिवानीसे ठीक लगाहुआ राजस्थानका उत्तरपूर्वी भूभाग शेखावाटीहै. शेखावाटी हजार वर्षोंसे अपना रंग और अपना 'अनंग' एक स्पष्ट विभाजक रेखासे हरियाणासे अलग करके रखतारहाहै. विगत २५ वर्षोंसे मेरी विचित्र मनःस्थिति भिवानी पहुंचतेही व्यथितसी होजातीहै, मैं उदास होजाताहूं. मुझे ऐसा लगतारहाहैकि जैसे अब हम किसी गांवकी बाहरी रेखाके बाहर एक अभि-शप्त परिक्रमामें पहुंचेंगे, जहाँपर कोई पुराना राजप्रासाद अपना खोयाहुआ वैभव उंगली उठाउठाकर बताताहुआ करुण कहानी कहताहुआ मिलेगा. . .खंडहर राजप्रासादसे अधिक भला राजस्थान आजभी क्या है ? . . .भिवानीसे ठीक आगे, दक्षिणमें, रेगिस्तान शुरू होजाताहै, पूरब-दक्षिणमेंभी यही रेगिस्तान फैलाहुआ अर्द्धमूर्च्छितसा पड़ाहुआहै. भारतके मानचित्रपर पंजाब-हरियाणाके नीचे राजस्थान इसतरह लेटाहुआहै, जैसेतो वह दीनभावसे लेटाहुआ चरणोंका दास हो ! समग्र अर्थोंमें मेरी यह अनुभूति सटीक या सप्रमाण नहीं भी होसकती. सिर्फ मुझे ऐसा लगताहै, इसलिए यह बात कहता हूँ. क्योंकि पंजाब-हरियाणा ११वींसदीके बादसेही पश्चिमी दर्रोंसे आनेवाले आक्रान्ताओंने पंजाब-हरियाणा-राजस्थानको अपने दर्प और अपनी निरकुंश उच्छृंखलतासे भोग्या भूमि बनाकर और उसे जकड़कर रखाथा. राजस्थानकी दुर्गतितो अकबर, जहाँगीर, शाहजहां और औरंगजेबने इसतरह दयनीय बनादीथीकि वह सचमुचही चरणोंका दाससा बना हुआ लेटारहाहै, आजभी मानो लेटाही तो हुआहै. . . .

इस अनुपातमें हरियाणाकी स्थिति औरभी बदनसीब भरीहै. भिवानीसे सड़क-मार्ग जैसे-जैसे दक्षिण और दक्षिण-पश्चिमकी तरफ फैलताहै, रेगिस्तानके लघु-लघुतर मरुराशिके टीले दायें-बायें बिखरते-फैलतेचलेजातेहैं. मरुराशि अवश्यही किसीभी खेतिहर प्रदेश-केलिए महा-महा अभिशाप सिद्ध हुआकरतीहै. विधिकी यह एक विचित्र लीला अवश्यहैकि शेखावाटी (उत्तरपूर्वी राजस्थान) की यह मरुराशि, कस्तूरीके प्राणसंजीवक नाभोंकीतरह, हरियाणाके धरतीपुत्रोंकी नाभिकेसाथ अपना दिव्य तारतम्य बनाकर रखतीरहीहै. मरु-राशिके इन धोरोंने हरियाणाके धरतीपुत्रोंको अपनी मर्यादारेखामें जीवितरहनेकी महान परम्परा सौंपीहै. अकल्पनीय कष्टोंमें, जैसे सैकड़ों मुसलमानी आक्रमण, अकाल, महामारी, सूखा, धर्मपरिवर्तनकी पैशाचिकतायें, ब्रिटिशराजकी संगीनोंके हत्याकांड—ऐसे महासंघातकारी

कष्टोंमेंभी इन धरतीपुत्रोंने दीनतम दरिद्रताके और अभिशप्त अभावोंके घनघोर वातावरणमें, अपनी धरतीसे और अपने-अपने पुरखोंके मकानोंसे कभी लगाव त्यक्त नहीं होने दियाहै. यहांतककि १८वींसदीके उत्तरार्द्धमें जब मराठोंने सारेदेशको लहूलुहान अपनी बर्बरतापूर्ण नृशंसताओंसे करदियाथा और हरियाणातक महानाशका संदेशलेकर वे लूटखसोट करतेहुए चलेआयेथे, उनकी निकृष्टतम विभीषिकानेभी इन धरतीपुत्रोंको अपनी-अपनी भूमिसे उखड़ने न दियाथा. शेखावाटीके उत्तर-पूरबमें देवराला बसाहुआहै और भिवानीसे देवरालातककी भूमिपर जो गांव बसेहुएहैं, वे ऐसेही मनुजोंके गांवहैं, जिनका वंश-इतिहास कहींकहीं और कभीकभी पूर्वमध्यकालतक पहुंचजाताहै. . .

शामका सूरज क्षितिजपर उतरकर, रेतीले टीबोंकी शीर्ष रेखाओंपर इसतरह आकरबैठगयाहै, मानो किसी देवताका अद्वितीय तेजस्वी मुख अपने विराट रूपको लेकर दीप्तभावसे खिलखिलारहाहो. . . .और, मुझे यह एहसास होरहाहैकि देवरालाका ग्रामदेवताभी अस्तमान सूर्यकेपास बैठकर मुझे वंदना देरहाहैकि हे इतिहासकार, आओ, आओ और इस देवरालाके युगप्राचीन इतिहासको धूलमिट्टीमेंसे उठाओ. हरियाणा राज्य अवश्य बनगयाहै, लेकिन हरियाणा राज्यके राजनीतिज्ञ अपने राज्यके युगप्राचीन इतिहाससे बेखबरहैं. यह पवित्रतम दायित्व तुमही अपने सबल कंधोंपर उठाओ. . .

मैं अपना मौन प्रणाम अस्तमान सूर्यदेवताकेसाथ देवरालाके ग्राम-देवताकोभी देताहूं और श्रद्धाभावसे यह आदेश शिरोधार्यकरताहूं . . .अब हमारी कार देवरालाकी तरफ, भिवानी-लुहारू सड़कको छोड़कर दायें 'बॉयपास'पर लुहाणीग्रामसे घूमजातीहै. भाई फूलचन्दजी हर्षित मन कहतेहैंकि अब हम देवरालाकीतरफ घूमरहेहैं. भाई श्रीनिवासजी अपनी मीठी हंसीकेसाथ कहतेहैंकि बरुआजीको देवरालामें इतना दूध पिलायेंगेकि ये दो रोजमेंही पहलवान होजायेंगे. . .कारमें हम तीनोंही हंस पड़तेहैं. . .

## देवरालामें शेखावाटीके राजपूतसामंतोंको अशुभ परिच्छाया

सांझके झुटपुटेमें हम देवरालाके अन्दर प्रवेशकरतेहैं. गांवके ठीक बीचमें फूलचन्दजी और श्रीनिवासजी दोनों भाइयोंकी पैतृक हवेली अपनेस्थानपर स्वस्थभावसे खड़ीहुईहै. ग्राममें दोनोंभाइयोंके पहुंचतेही अनेक ग्रामवासी उनके स्वागतमें समवेत होजातेहैं. दोनों भाइयोंने इस गांवके दुखसुखमें बराबर हाथ बंटायाहै और आजभी बंटानेकेलिए बराबरही तैयाररहतेहैं. मैं अपने कामसे लगताहूं. मैंतो इस गांवमें इतिहास-तीर्थ करनेआयाहूं. बड़ेबूढ़ोंसे बातकरनेमें अपनेको व्यस्तकरलेताहूं. नदी-तीरके ऊपर पहुंचकर उसका असली अर्थ प्राप्तकरलेनाही तो तीरथ है ! देवरालाके तटपर पहुंचकर इसके इतिहासके मर्मका यथार्थ अर्थ यदि मुझे सुलभ होजाये, तो मेरा यह तीर्थ पूराहोजाये, इसी ध्यान-चेष्टामें मैं कागज-कलम लेकर बेरतीब-बेसिलसिले और अस्तव्यस्त इतिहाससूत्रोंको नोटकरनेकेलिए बाहर एक नंगी खाट बिछाकर बैठजाताहूं.

रातको बारहबजेकेबादही देवरालाका इतिहास-लेखन पूर्णहोताहै. इस लेखनमें देवरालाके सभी जातियोंके भाई आकर सहयोग देनेकेलिए एकत्रहोगयेहैं. भाई फूलचन्दजी और श्रीनिवासजीने आगत सभी भाइयोंको समान आदर देतेहुए खाटोंपर बैठाया. जो आये, उनमें हरिजनभी थे, चर्मकारभी थे, तेलीभी थे, ग्राम-पंचभीथे, अहीर भीथे और जाटभी थे, ब्राह्मणभी थे. कलकत्ता महानगरमें कभी इसतरह एक ग्रामकी प्रतिनिधि आत्माका संयुक्त भाव अपना सौम्य दर्शन नहीं देता. वहां हर नागरिक एकदूसरेसे अलगथलग रहताहै. इतिहासका ऐक्यभाव इन सभी जातीय शक्तितत्वोंके ऐक्यभावमेंही अपना प्रतिनिधि दर्शनदेसकताहै ! मुझे बड़ा हर्षहैकि मेरा देवराला-तीर्थ पूर्ण होगया है. देवरालाकी भूमिका दर्शनकर मुझे एक नया पुण्य नसीबहुआहै. . . .

देवरालाका इतिहास १६वींसदीके उत्तरार्द्धतक राजीखुशी मिलताहै. यह खेतिहरोंका गांवथा, लेकिन इसपर राजपूतोंने अपना आधिपत्य जमाकर रखाथा. राजस्थानकी सरहदको लांघकर छोटेछोटे राजपूत सामंत इधरके गांवोंपरभी हावी होतेगयेथे. शायद ग्रामीण जीवनमें उनकी अनिवार्य आवश्यकता इसलिए भी रहीहोकि निरन्तर विदेशी (पठान-लोदी-खिलजी-मुगल) राजमें ये राजपूत कमसेकम अपनी प्रजाको हिन्दू रीतिनीतिका अभय वरदानतो देतेही रहेंगे ! इस रीतिनीति और परस्पर निर्भरताकेकारण हरियाणामें हिन्दू जातियोंका अमृतपायी जीवन दीर्घसे दीर्घ बनतारहाहै. पूरे ८००-९०० वर्षोंतक पश्चिमीदर्रेसे होनेवाले आक्रमणोंके बावजूद यहाँपर हिन्दू धर्मका अंशांशमें ही तिरोधान हो पायाथा. सबसे बड़ीबात, पूरेसमाजकी जो रीढ़ खेतिहर प्रजाथी, वह हिन्दूही रहीथी. इससेभी जो विशिष्ट बातथी वह यहकि एकभी अग्रवाल वैश्यने धर्मपरिवर्तन नहीं कियाथा. यहीकारणहैकि खेतिहर प्रजा और अग्रवालोंकी खेतिहर बनेरहनेकी मूलभूत जीवनप्रणालीके बीच एक तानाबाना गुंथाहुआरहा और वैदिक युगोंसे चलेआरहे संस्कारोंमें किसीप्रकारका क्षय नहीं होपाया, न ही इन संस्कारोंमें किसी भी दिशासे कोई दरार प्रकटहोपायी. . . .

यह स्वाभाविकहैकि जब ग्रामीणोंकेबीचमें बैठकर पुरानी बातोंका रामरसरा छिड़ताहै, बात एक विषयपर टिक नहीं पाती. बड़ेबूढ़े अपनेहिसाबसे अपनी स्मृतियोंके छोर पकड़कर नईपुरानी बातोंकी खिचड़ी पकानेलगतेहैं. और ऐसेही संदर्भित-असंदर्भित संस्मरणोंके-बीच देवरालिया परिवारकी इस कोठीका एक महत्व सामने आनेलगताहै, जिसके सामने हम इससमय बैठेहैं. इस कोठीकी शुरुआत सोहन-लालजीने अपने हिसाबसे कीथी, बादमें उनके तीन बेटोंकी मिलीजुली सक्षमता-सामर्थ्य संयुक्तभावसे इस कोठीको नयेसेनया रूपदेतीरहीहै. यथार्थमें सचाई यहहैकि जबसे देवरालामें १९५०के बादसे कुछभी नया निर्माणहुआहै, वह तीनों भाइयोंका संयुक्त कृतित्वहै, जैसे कुआं, स्कूल-भवनमें बड़ी दानराशि, सिविल हॉस्पिटल, और अन्य छोटेबड़े सेवाकार्य. लेकिन आज यह कैसा दुखद विषयहैकि बिचले भाई जुगल-किशोरजी अब इस दुनियामें नहींरहे. व १ अगस्त १९७३ को इस असारसंसारसे चलेगये. देहावसानसे पहले वे अपना अधिकांशसमय

इसी देवरालामें व्यतीतकरनेलगेथे. और एकप्रकारसे यहाँ जितनेभी नवनिर्माणहुए, उनमें उनके हाथका संस्पर्श और उनकी सूझबूझ ज्यादा सक्रियरहीथी. मैं एक क्षणभरकेलिए सिर उठाकर अंधेरीरातमें गैसकी रोशनीसे (दो घंटेकेलिए बिजली जब चलीगयी, तो गैस जलाईगयी) जितना भी सन्मुख भाग कोठीका आलोकित होरहाहै, उसे ध्यानसे देखनेलगताहूं. कितनी आसक्ति और कितने ममत्वकेसाथ व्यक्ति इस धराधामपर अपनेहाथोंसे भवनोंका निर्माणकरताहै, और फिर उसे आगामी पीढ़ियोंके जिम्मे सुपुर्दकरजाताहै. मौनभावसे मैं अपना आदर-प्रणाम जुगलकिशोरजीको देताहूँ.

## २. लैंडस्केप-विहीन, भूगोल-विहीन, भाग्यनिर्माण-विहीन हरियाणाके प्रबल भाग्यका ध्वजआखिर कहाँहै ?

रातके ९ बजे हमें बीचमेंसे उठादियाजाताहै. भाई फूलचन्दजीका आग्रहहैकि पहले गरमगरम भोजनकरलियाजाये. फूलचन्दजी और श्रीनिवासजी––दो भाइयोंके बोलीके लहजे एक नदीके दो तटों से भिन्न आवाजकरतेहैं. फूलचन्दजीके स्वरमें जेठे भाईका सा आदेशहै, लेकिन मीठी मूलीसी चरपराहटभीहै. श्रीनिवासजीके स्वरमें पावसेरी टमाटरकासा गुलाबी रस लबालबहै, लेकिन खटासभी जमकरहै. जबतक भोजन परोसाजाये, फूलचन्दजी पहली मंजिल, दूसरी मंजिलके कमरे किस शैलीसे निर्मित हुएहैं, यह दिखाने ऊपर लेजातेहैं. और फिर हम बातकरतेहुए ऊपर छतपर चलेजातेहैं. सारा देवराला ग्राम इस कोठीके इर्दगिर्द शांतभावसे इसतरह सोयाहुआहै, जिसतरह मेलेठेलेका दूकानदार बीच मैदानमेंही चादरओढ़कर अपनी रात गुजारदियाकरताहै. पर यह कैसा आनंद खिलखिलाकर नाचरहाहैकि देवरालामें हर कच्चेपक्के मकानमें बिजलीकी रोशनीका लट्टू दमदमारहाहै. मैं अनायासही पूछ बैठताहूं : "आपने बंशीलालसे दोस्तीका यह फायदा तो उठायाकि देवरालामें बिजली आगयी ?"

बंशीलाल नाम हरियाणाके नवयुवक मुख्यमंत्रीकाहै. जिनदिनों कांग्रेसकी राजनीतिमें बहुत उठा-पटक चलरहीथी, तब कामराज कांग्रेस-अध्यक्षके नाते यहाँ आयेथे और बंशीलाल जैसे अपरिचित नवयुवकको हरियाणाका मुख्यमंत्री बनाकरगयेथे. उसीसमयसे, आज (१९७४) ८ वर्षका दौर होगयाहै, वे अपनी कुर्सीपर जमेहुएहैं.

मेरे प्रश्नका उत्तर श्रीनिवासजी देतेहैं, कहतेहैं, "नहीं, बंशीलालसे दोस्ती जरूरहै, लेकिन उस दोस्तीकी वजहसे यह बिजली देव-रालाको नहीं मिलीहै. आज सारे हिन्दुस्तानमें अकेला हरियाणाही ऐसा राज्यहै, जहाँपर गांवगांवमें बिजली पहुंचादीगयीहै, और यह चमत्कार किया है अकेले बंशीलालने. हमतो बराबरही नईदिल्ली जातेहैं और पार्लियामेंटके लोगोंसे मिलतेहैं. सभी बंशीलालकी योग्यता-की तारीफकरतेहैं. बंशीलालकेकारणही आज भारतके नकशेपर हरियाणाका नाम ऊपर आयाहै. अभी यह नया राज्यहै, लेकिन इसी नये राज्यमेंही यह चमत्कार पैदाहुआहैकि हर गांवमें बिजली पहुंचगयीहै. इसलिए आज अकेले हमही नहीं, हरियाणाका हर आदमी बंशी-लालको अपना दोस्त मानताहै. और, बरुआजी, मैं आपको एक बात और बतलाऊं."

फूलचन्दजी कहतेहैंकि पहले नीचे चलो, भोजनकी थालीपर बैठो, फिर बातेंकरतेरहो. इसकेसाथ ही आप हरियाणाकी कोई साखी सुनातेहैं, जिसका शायद अर्थ यहहैकि भोजनकी थालीसे यारी जमकर निभानी चाहिये, उसमें देरी करनी ठीक नहीं रहती. हम तीनों हंसतेहुए नीचे चलेआतेहैं.

सामने चूल्हा जलरहाहै. ईंधनके नामपर लकड़ियां जलरहीहैं. लकड़ियोंके चूल्हेमें रोटियोंका जो स्वाद है, वह पत्थरके कोयले या गैसके चूल्हेने नष्टकरदियाहै. तो आज अति स्वादिष्ट भोजन हमें नसीब होगा, इस विह्वल भावसे मैं अपनी थालीपर आलती-पालती मारकर बैठजाताहूं. अति शुद्ध घी, अति शुद्ध स्वादिष्ट रोटियां और अति स्वादिष्ट सागसब्जियां––हरियाणामें यह त्रिगुणी मिठास सदियों पुरानीरहीहै. आज उसीका रसोपभोग हम कररहेहैं !

श्रीनिवासजी अपनी बात आगेबढ़ातेहुए कहतेहैं, "बंशीलाल आदमी छोटाहै, कहनेका मतलब उमरमें छोटाहै, लेकिन जबसे मुख्यमंत्री हुआहै, इस छोटेसे राज्यपर ५०० रुपया करोड़ सालका खर्चकरताहै. पहले यह हालतथीकि जेठ-दुपहरीमें कोई चाहेकि आंखमें आंसू आजाये, तो आ नहीं सकता था. लेकिन बंशीलालने हरियाणाकी चारों दिशाओंमें नहरोंका जाल बिछादियाहै. अब इधर भिवानी के रेतीले टीबों-धोरोंमेंभी नहरें पहुंचादीगयीहैं. बिजली और नहर हरियाणाकी नई थाती बनगयीहै. सड़कोंका तो चारों तरफ जाल बिछायाजारहाहै. कहांतो भिवानी जैसे शहरमें आधेसे ज्यादा मकानोंके ताले पड़ेहुएथे, क्योंकि वहाँके लोग परदेशोंमें धनकमाने निकलगयेथे, लेकिन अब भिवानी जैसे शहरमें जमीनका भाव १०० रुपयेसे ऊपर होगयाहै. बहुत जल्दी भिवानी हरियाणाकी नई दिल्ली बननेवालाहै. बंशीलाल जैसा सच्चा ईमानदार मुख्यमंत्री हमें मिलाहै, यह हरियाणाका सौभाग्यहै."

हम श्रीनिवासजीकी बातें सुनतेहैं. अच्छा लगताहै. तो देशके मानचित्रपर हरियाणाका स्थान सुस्पष्ट चिह्नोंकेसाथ अंकित-करनेवाला कोई माईका लाल क्या सचमुच देशकी राजनीतिमें खड़ाहोगयाहै ?

श्रीनिवासजी भोजन करतेजातेहैं और अपनी बात आगे बढ़ातेहैं, "देखो, अग्रवालोंका मूल स्थान अग्रोहाहै और वह इसी हरियाणामें है. आजतक कितने राज्य आयेगये, लेकिन किसीने अग्रोहाको इतनी इम्पोरटेंस नहीं दी. बेचारे अगरवाले देशदेशमें मारेफिरतेहैं और रोजी-रोटी कमातेहैं. लेकिन अब बंशीलालका ख्यालहैकि हरियाणामें इंडस्ट्री स्थापितहोनीचाहिए और अगरवाले-माहेश्वरी-ओसवाल

सभी हरियाणाकी इंडस्ट्रीमें हाथ बंटानेकेलिए जमनेचाहिए. देखतेदेखते बंशीलालने फरीदावादकी इंडस्ट्रियल कोलोनीको इंडस्ट्रियल सिटी बनादियाहै. इतनी बड़ी इंडस्ट्रियल सिटी देशके किसी अन्य नये राज्यमें, शायदही हो ! फरीदावाद आज हरियाणाका झंडा दिल्लीकी नाकके आगे फहराताहै !"

फूलचन्दजी कहतेहैं, "यह माननापड़ेगाकि इन्दिराजीने बंशीलालको अपना मौरल सपोर्ट खूब दियाहै, तो बंशीलालनेभी इन्दिराजीकी पौलिसीको आगेबढ़ानेमें अपना तन-मन निछावर करदियाहै."

श्रीनिवासजी अब हरियाणाके एक नये पहलूकीओर इशाराकरतेहैं, "हरियाणामें सबसे बड़ा एक ही तीर्थ है कुरुक्षेत्र. दुनियाके लोग यहाँ आतेथे, उन्हें कुरुक्षेत्र-पेहोवा आदि स्थानोंपर पहुंचकर कितना धर्म मिलताथा, यह तो वे नहीं जानपातेथे, लेकिन यहाँसे जब जातेथेतो दो गरमगरम सांस और एक आंसू अपने पीछे छोड़कर जातेथेकि कैसी दुर्दशा इन तीर्थोंकीहै. न पक्के घाटहैं, न अच्छी धर्मशालायें हैं, न कुंडोंकी कोई सफाईहै और न ही बड़े तालाबोंमें नया बरसाती जल आये, इसकी व्यवस्थाहै. आखिर वंशीलालका जमाना आया, और स्वामी गणेशानन्द और गुलजारीलालजी नंदा जैसे व्यक्तिभी इसी दौरमें सामने आये और कुरुक्षेत्रका एक कायाकल्पहोगया. अब हरियाणाको नाजहैकि उसकेबीचमें ही महाभारतकालका सर्वाधिक प्राचीन तीर्थ बड़े शानदार ढंगसे तैयारकरवादियागयाहै. इसी कुरु-क्षेत्रमेंही बिड़ला लोगोंने एक बड़ी धर्मशाला बनवाईहै और उसमें संगमरमरका बनाहुआ वह विशाल रथ बनवायाहै, जिसमें कृष्ण भगवान बैठकर अर्जुनको गीताका उपदेशदेरहेहैं. इस कुरुक्षेत्रमें सबसे शोभनीय नवनिर्माण इसीरथका हुआहै, ऐसा कहाजासकताहै. अब यह भी खुशीकीबातहैकि इसी कुरुक्षेत्रमें कुरुक्षेत्र-विश्वविद्यालय बड़े पैमानेपर कामकररहाहै. वंशीलालका जमाना हरियाणामें स्वर्ण-युग लायाहै. इसे यदि समय मिला, तो यह हरियाणाके मैले-कुचैले गांवोंकोभी एक नया तानाबाना पहनादेगा, ऐसी आशा हम हरियाणाके लोग लेकर चलतेहैं."

## २०वीं सदीके प्रारम्भमें हरियाणाकी छातीपर पञ्जाबकी बूरियौक्रैसीके हाथों रचीगयी विभीषिकायें

भाई श्रीनिवासजी वहुतदेरतक औरभी कुछ बतलातेरहे. स्वाभाविकहैकि हरियाणाके लोगोंकोभी अपने राज्यकी बातकरनेमें उसीतरह उत्साह है, जिसतरह पश्चिम बंगालके लोग या अन्य राज्योंके लोग बढ़चढ़कर अपनेअपने राज्योंकी बातें अपने अखबारोंमें छपातेहैं. पर सन् १९५८-५९ में हरियाणाका जब मैंने विस्तीर्ण अध्ययनकियाथा, उससमयतक हरियाणा यद्यपि नहीं बनाथा, लेकिन सारा हरियाणा लैंडस्केपविहीन और भूगोल-विहीन एक प्रदेश मात्रथा. जोभी बड़े अफसर नियुक्तहोतेथे, वे प्रायः सिखसरदार रहतेथे. ऐसालगताथाकि जैसे हरियाणाका वर्चस्व बड़ा अफसर बननेकेलिए अभी गर्भही ग्रहण नहीं करपायाहै ! यह केवल पंजाबकी बूरियौक्रैसीके हाथों रचीगयी विभीषिकाओंको बेड़ियोंमें कसेगये बन्दीकीतरह भोगता रहेगा. हर गाँवमें ढेरसारी गंदगी और मैलाकुचैला तानाबाना. सड़कें कच्ची या अधवूढ़ी !! लगताथाकि १००० सालसे ऊपर इसपर कहर बरपाहोतेरहेहैं, इसलिए आजाद भारतमेंभी भाग्यनिर्माण-विहीनही यह हरि-याणावनारहेगा ? ऐसीस्थितिमें हरियाणा राज्यबननेकेबाद यदि बंशीलालके रूपमें एक अच्छा ईमानदार मेहनतकश मुख्यमंत्री उसे मिलगयाहै, तो क्या यह मानलेनाचाहिएकि हरियाणाके प्रबल भाग्यका ध्वज उसके हाथमें आगयाहै ?

आधुनिक भारतमें एक भ्रम पैदाकरनेवाली मृगमरीचिका चारोंतरफ फैलीहुई नजर आतीहै. दैनिक पत्रोंको पढ़नेसे पताचलता-हैकि जैसे राजनीतिज्ञही किसी प्रदेश या किसी राज्य या पूरे देशके भाग्यनिर्माणकी क्षमता लेकर जमेहुएहैं. लेकिन किसीभी देशमें कोई राजनीतिज्ञ किसी देशके भाग्यनिर्माण का सौदा पूरा नहीं करपायाहै. यह सौभाग्यतो संतरूप समाजसुधारक और चिंतक शिक्षाशास्त्रियोंके भाग्यमें ही रहाहै. क्या हरियाणामें ऐसे संतरूप समाजसुधारक और चिंतक शिक्षाशास्त्रियोंका जन्म होचुकाहै ? १९वीं सदीके उत्तरार्द्धमें एक संतरूप समाजसुधारक हरियाणाको महर्षि दयानंदके रूपमें मिलेथे, लेकिन वे जल्दीही अपना कार्यक्षेत्र लेकर राजस्थानमें चलेगये, जहाँ उनका कार्य शुरूभी न होपायाथाकि उनका अपघातकरदियागया, उन्हें विषदेकर मारदियागया ! उसकेबादसे हरियाणाका समाज जागृति और चेतनाके विषयमें विना ध्वज और बिना नेतृत्वके रहाहै . . .

श्रीनिवासजीकी वातें सुनकर लगताहैकि हरियाणाके मुख्य मंत्री बंशीलालने बिजली और नहरोंके निर्माणसे हरियाणाकी भूमि ऐसी उर्वर अवश्य वनानेका सिलसिला शुरूकरदियाहै नईपीढ़ीका मार्ग प्रशस्त करनेकेलिएकि संत, समाजसुधारक, रहनुमा, शिक्षाशास्त्री और स्व-भाग्यका चैतन्य फैलानेवाले शीर्ष पुरुष तैयारहों. हरियाणाके प्रबल भाग्यका ध्वज इन्हींके हाथों शनैः-शनैः राष्ट्रके क्षितिजपर ऊपरसे ऊपर उठेगा. वंशीलालने इस ध्वजकी रूपरेखा ही तैयार नहीं करदीहै, उसका भावनात्मक वातावरण हरियाणाके गांवगांवमें और हरियाणाके बाहर, केन्द्रीय सरकारके मनमानसमेंभी रचदियाहै ! यह सचमुचही बड़ी बातहै !!

## सौभाग्यवती संतानोंके भाग्यपत्रकोंसे शोभित वंश-वृक्ष

भोजनकेवाद हम फिर इस सूत्र-संधानकेकाममें व्यस्तहोजातेहैंकि देवराला ग्राममें अग्रवालोंका इतिहास किस रीतिनीतिका रहाहै और श्रीनिवासजीके पूर्वजोंका आधिपत्य किस शैलीसे यहाँके जनजीवनमें उल्लेखनीय बनारहाहै. और इन दोप्रश्नोंको मुख्यरखतहुए, हम श्रीनिवासजीके पूर्वजोंकी पीढ़ियोंका एक क्रम बैठानेलगतेहैं, उनका वंशवृक्ष एक तरतीबमें आजाये, इसका प्रयासकरतेहैं. आखिर

रातके १ बजे हमारा काम पूराहोताहै. श्रीनिवासजी अपने वंशकी छठीपीढ़ीमें हैं. ३० वर्षकी एक पीढ़ीका औसत सहजभावसे हम मानलें, देवरालामें श्रीनिवासजीके पूर्वजोंकी छ: पीढ़ीका एक सीधाक्रम मिलताहै. इन छ: पीढ़ियोंमें लगभग २५० बेटेपोते-पड़पोते हुएहैं और भारतमें कुछ खास नगरोंमें ये लोग आज फैलगयेहैं. गिलोयकी बेल अपनी अन्त:शक्ति लेकर फैलतीहै और जब फैलतीहै, तो खूब फैलावलेकर फैलतीहै. वटका पेड़ फैलनेकेलिए १०० बरससे ऊपरलेताहै. किसी वंशका फैलाव किसी शाश्वत नियमसे नहीं फैलता. यदि दीर्घ आयुका पुन्य हर पीढ़ीसे प्रचुर मिलजाये, तो दो पीढ़ीमें दस व्यक्तियोंका परिवार बनजाये और नि:संतानरहनेका अभिशाप मुंहबोला बनजायेतो भरेपूरे परिवारमें एक विराट शून्य आकर बैठजाये ! सौभाग्यसे शीलूजीकी तीसरीपीढ़ीमें १३ संतानेंहुईं उसकेबाद सभी परिवार-शाखाओंमें संतानवती बहुयें आतीरहीं और फूलपत्तियों से आच्छादित पेड़ उनकी पीढ़ीमें बनतारहा. शीलूजीके पुत्र नत्थनरामजीकी एकमात्र कन्या हुकमाबाई का वंश यद्यपि अधिक नहीं फैला, लेकिन इस वंशकी वर्तमान पीढ़ीका कृतित्व अवश्य ऐसा बनगयाकि उससे देवराला ग्रामका सुनाम सारे हरियाणामें और सारे भारतमें फैलेहुए हरियाणाके अग्रवालोंमें प्रिय बनगयाहै. किसीने सचकहाहै, "झाड़को पुन्य दस कोस चालकर थकजावै, माणसको पुन्य हजारकोस चलकरभी थकनेको नाम नहीं लेवै !" किसी अच्छे वृक्षका सुनाम गांवके दायरेमें फैलकरही रहजाताहै, किसी अच्छे पुन्यवान व्यक्तिका सुनाम हजारमीलसे बाहरभी जब फैलताहै, तो और कई हजार मील दूरतक फैलताचलाजाताहै. श्रीनिवास जी अग्रवाल अपनी रीतिनीतिसे कीर्तिपुत्र हैं. आपने अपने जीवनमें कठोर श्रमकरनेका एक लम्बा सिलसिला रखाहै. एक व्यापारीपुत्रहोकरभी, आपने जल्दीही इतना उत्तम संस्कार परिपक्वकरलियाकि उसकेबलपर आपके मित्रोंका एक बड़ा दायरा बनतागया. जो आपके निकट आया, उसको आपने अपने उदात्तभावके वशीकरण मंत्रसे दूर न होनेदिया. और फिर देशके भाग्यपुरुषोंके दायरेमें आप एक सुपुष्ट संप्रीतिका परिचय देनेलगे. कलकत्ता, नईदिल्ली, बम्बई —ये मुख्य तीन स्थानहैं, जहाँपर आप व्यापारभी करतेहैं, लेकिन धनलाभ वाला व्यापार शायद आपका कम होताहै, संप्रीतिभरी मैत्रीका व्यापारही अधिक होताहै. यह संतोषका विषयहैकि देवरालाके शीलूजीके वंशवृक्षमें आपनेभी पत्राच्छादित पेड़को चार नये पत्तोंसे शोभितकरदिया है. आप चार पुत्रोंके पिताहैं. आपने एक नई शैलीके व्यापारमें अपनेको समृद्ध बनायाहै. लेकिन आप हरियाणाके पहले वरद् पुत्रोंमेंसे एकहैं, जिन्होंने अधिकतम मित्रबनानेमें एक अक्षय कीर्ति अर्जितकीहै. अकेले कलकत्तामें यदि हम हरियाणाके सभी लोगोंकी एक सूची बनायें और फिर यह हिसाबलगायेंकि हर व्यक्तिके कितने मित्रहैं, तो निश्चितरूपसे श्रीनिवासजीही इस सूचीमें सबसे ऊपर दिखाईदेंगे, क्योंकि उनके मित्रोंकी सूची सबसे बड़ी दिखाईदेगी . . . आप मैत्रीके धनीहैं, इसीलिए आप हरियाणाकी कीर्ति के धनीहैं. इसीलिए हरियाणाके प्रबल भाग्यका ध्वज वर्तमान पीढ़ीमें जिनलोगोंने मिलजुलकर ऊपर उठायाहै, उनमें आपकेभी दो समर्थ हाथ लगेहैं. हरियाणाके प्रबल भाग्यका ध्वज कई लाख लोगोंके उठाये ऊपर उठेगा. लेकिन शर्त यहहैकि वे सभी हाथ श्रीनिवासजीके दोहाथोंकी तरह समर्थ हों और हरियाणाकी कीर्तिके प्रति आस्थावानहों. श्रीनिवासजी अगरचे कभी हरियाणाका गुणगान राजनीतिक नारेबाजीकी शैलीमें थोथी भाषाकेसाथ नहीं करते, लेकिन आपकी जीवनपद्धति इतनी टकसालीहैकि उसे ध्यानसे देखनेपर हरियाणाकेप्रति एक आस्था उपजतीहै. हरियाणाका व्यापक हित उसदिन तभीहोगा, जबकि उसके शतशत पुत्र वरद्-पुत्र बननेकी गहन साधनाकरें. आस्थावान पुत्रबननेका सुनामकरें.

## ३. देवराला ग्रामकी परिकमा प्राचीन समग्ररूपसे लुप्त, नवीनसिर उठाये अभिवादन करताहै !

दूसरेदिन जल्दीही हम उठे. फूलचन्दजीने हमारा यह सुझाव पसन्दकियाकि अब देवरालाकी एक परिक्रमाकरलीजाये. वे स्वयं चाहतेथेकि एकबार हमें देवरालादिखायें. उनकी चाहना यहथीकि देवरालाग्राममें जो जनकल्याणका काम उन्होंने अपने भाइयोंकेसाथ मिलकर कियाहै, उसका सही परिचय वे अपनेसाथ घुमाकर करायें. चाय पीकर, हमने सबसेपहले बायेंहाथका परिपार्श्व देखना प्रारम्भकिया. नगरके बाबूलोग जब गांवमें पहुंचतेहैं, तो यहाँकी गर्द और यहाँकी मटमैली बस्तीको देखकर या तो नाकभौ सिकोड़तेहैं या घबराजातेहैं और ऊबनेका भाव प्रकट करतेहैं. हमने हरियाणाके १०० से ऊपर गांवदेखेहैं. हम गांवोंमें जाकर इसलिए रमजातेहैं, क्योंकि हम वहाँ पहुंचकर यह भाव प्रधान रखतेहैं, कि मानो हम तीर्थ करनेआयेहैं : इतिहास-तीर्थ ! पर देवरालामें हमें सहसाही श्रीनिवासजीने एक नया संजीवन-मंत्र देदियाकि गाँवमें पहुंचकर कौनसा भाव प्रधानरखनाचाहिए. हवेलीसे निकलकर जब हम गाँवकी परिक्रमाकेलिए चले, तो हमने सहज प्रश्न कियाकि आपके गाँवमें सबसे प्रधान स्थान कौनसाहै, जो प्राचीनभीहै और आसपासके गांवोंमेंभी मानतारखताहै. श्रीनिवासजीने बड़ा अच्छा विनोदकरतेहुए कहा, "बरुआजी, गोदियोंसे उतरे बालक को मांकी गोदीही सबसे अच्छीलगतीहै. उसीतरह परदेशसे लौटे बटोहीको अपना पूरा गांवही प्याराहोताहै. हमतो समझतेहैंकि हमारा देवराला भिवाणी-रौहतकसे भी ज्यादा प्याराहै."

इस विनोदपर हमें आनंदका रोमांच होआया. खुलकर हम हंसपड़े. यथार्थमें श्रीनिवासजीने जो बातकहीथी, वही बात हरियाणाका हर जवांमर्द बोलताहै. तो तीर्थसेभी ऊपर माँकी गोदीहै. जब हम किसी गांवमें जायें, तो यह मानकर चलेंकि हमारा शैशव वापस आगयाहै और अब हम अपनीही किसी माँकी गोदीका सुखसुहास प्राप्तकरनेजारहेहैं ! एक विलक्षण भावभूमि हमें श्रीनिवासजीके इस कथनमें हाथलगगयी. इतिहासकी ऐसी बारीकी हमें दुर्लभवस्तुकीतरह सुलभहोगयी, जो आजतक हमें सचमुचही किसीभी ग्रंथमें दिखाई नहीं देपायीथी . . . .

## सिद्ध-वचन बाबा हृदयराम, परमयोगी मूँगीपा

हम परिक्रमाके अन्तर्गत बाबा हृदयरामकी समाधिपर पहुंचजातेहैं. हरियाणामें स्वामी एक अलग जातिहै. आजसे ४०-५० साल-पहलेतक इस जातिके लोग एक विचित्र प्रकारकी पोशाकपहनतेथे. और घरघरसे आटा मांगकर सबकेप्रति कल्याणकामनाका उद्घोष-करतेथे. देवरालामेंभी एक परिवार स्वामियोंका रहताथा. उसी परिवारमेंसे एक युवक साधुबनगया और अपनेही तपसे वह वचनसिद्ध होगया. दूरके गांवतकके ग्रामीणोंका वह श्रद्धाभाजन बनतागया. जब उसने अपनी जीवनलीला पूर्णकी तो समाधिली. प्रतिवर्ष एक खासदिन ग्रामीण अपना श्रद्धानिवेदन आजभी इस स्थलपर आकर करतेहैं. देवरालिया परिवारके भाइयोंने ग्रामीणोंकी भावनाका आदर करतेहुए बहुत बरसोंपहले इस समाधिका जीर्णोद्धार करतेहुए इसका परकोटा पक्का बनवादियाथा. क्योंकि तीनोंभाई गाँवके सबसे ज्यादा कमाऊ पूतरहे, इसलिए तीनोंने इस अयाचित दायित्वको विनयभावसे पूराकियाथा.

हम चलतेजातेहैं, और आदमी-आदमीसे भाई फूलचन्दजी राम-राम करतेचलतेहैं. भाई श्रीनिवासजी मिलनेवालोंसे मौन मुस्कराहटलेकर आनंदितहोतेहैं; क्योंकि आगे बड़ा भाई चलरहाहै, इस लिए लक्ष्मणकीतरह वे पीछेचलरहेहैं. जो बोलनाहै, वह भाई फूलचन्दजी करतेहैं. उनके हर कथनमें मानो श्रीनिवासजीकी सहज स्वीकृतिहै. बांयां परिपार्श्वदेखकर हम अब मूंगीपाकी मढ़ीपर आजातेहैं. राजस्थानमें चूरूसे लेकर हरियाणाके रौहतक ग्रामतक हर गांवमें १८वीं-१९वीं सदीमें १००-१५० संत हुएहैं. ये सभी संत ग्रामांचलोंमें निवासकरनेवाले परिवारोंमें पैदाहुएथे. 'मूंगीपा' अपनी पहलीध्वनिसे यह प्रकटकरताहैकि वह कोई परदेशीथा. लेकिन हमारी निश्चित धारणाहैकि ये मूंगीपाभी इसी देवभूमिके बाशिन्देरहेहोंगे और देवराला-भिवाणी अंचलकी भूमिको इन्होंने अपनी क्रीड़ास्थली या तपस्थली बनायाहोगा. इनका समाधिस्थलतो भिवाणीके पास तुषामकी पहाड़ीपर रहाथा. ये मूंगीपा बहुतही विलक्षण तपस्वी हुएहैं. लेकिन इनका इतिहास अब स्मृतिपटसे धुलपुंछगयाहै. पर इनकी मढ़ीकी पूजा अबभी ग्रामकेसभी परिवारजन करतेहैं. प्रत्येक शुक्लपक्षकी चौदसको इन्हें धोकदीजातीहै. इनकी मानतासे लोगोंकी मनोवांछना पूरीहोतीहै. हमनेभी अपना श्रद्धानिवेदनकिया. यह मढ़ी उस कुएंपरस्थितहै, जिसका मूलनिर्माण सेठ सोहनलालजीने प्रारंभ करवायाथा. बादमें उनके पुत्रोंने, भाई फूलचन्दजीने, भाई जुगल-किशोरजीने, भाई श्रीनिवासजीने मिलकर इस कुएंका विस्तीर्ण पनघट इसरीतिनीतिसे करवादियाहैकि यह इस गांवका सबसे बड़ा कुआं बनगयाहै. शिलामंडित पनघट, स्त्रियोंकेलिए चौबारे और चार गुम्बज, ताकि एकसाथ चारों चकरियोंपर रस्सा-डोल डालकर ग्रामीण स्त्रियां पानी भरसकें. गांवोंमें कुआं खुदवाना वैश्योंका शाश्वत धर्म मानागयाहै और इस धर्मका पालन महाभाग वैश्यही करतेरहेहैं. देव-रालामें वैश्योंके काफी परिवारहैं, लेकिन महाभाग वैश्य बननेका सौभाग्य प्रभुकेहाथों इन तीनों भाइयोंकोही मिला था और यह आनंदका विषयहैकि इन तीनों भाइयों ने सत्यभावसे, विनयभावसे, समर्पित भावसे इस धर्मका प्रतिपालन बड़ेही आदर्श रूपमें कियाहै. इस कुएंका विशाल रूप देखकर फूलचन्दजी और श्रीनिवासजीकी कल्याणकामनाका विशाल रूप समझमें आजाताहै. जब हमने फोटोग्राफरको आदेश दियाकि इस कुएंका एक फोटो लेलो और साथही हमने आग्रहकियाकि फूलचन्दजी और श्रीनिवासजी कुएंपर खड़ेहोजायें, तो हमनेदेखाकि दोनोंही भाई बड़े संकोचकेसाथ, विनय-सुलभ कृतज्ञतालेकर, कुएंपर खड़ेहोगये, मानो स्वीकारकररहेहोंकियह इस देवराला भूमिकी मिट्टी और यहाँका जलही है, जिसने उन्हें कलकत्तामें उत्तम धनकमानेका पुन्य समर्पितकियाहै . . .

## देवरालिया-बन्धुओंका दर्शनीय कुआँ

यह कुआं ग्रामकी सरहदसे लगाहुआ गांवके बाहरहै. प्रायः कुएं गांवसे बाहरही रखेगयेहैं, ग्राम-संरचनाका यह अविभाज्य तथ्यरहाहै. क्योंकि ग्रामकी सम्मिलित सम्पत्तिही वह मान्यरहाहै, इसलिए इसका स्थान ग्रामकी सीमारेखासे बाहर निर्धारितरहताथा. वहींपर ग्राम-पशुभी समवेत होकर पानीपीतेथे और उसका बहाहुआ पानी पासके खेतोंको अपना सिंचनपोषणदेताथा.

इस कुएंकेपास देवरालिया-बंधुओंका बागहै. इसकेचारोंओर एक ऊंचा परकोटा चिनाहुआहै. इसमें गेहूंका खेत उगाहुआहै और सागसब्जीभी उगाईजातीहै. इसी कुएंका जल इस बागको प्राप्त होताहै. यह हर्षका विषयहैकि दोनों भाइयोंने हरियाणाके मुख्य मंत्रीकेपास यह प्रस्ताव दियाहैकि यदि हरियाणा सरकार इस बागपर एक एग्रीकल्चर-कॉलेज स्थापितकरदे, तो वे यह ३०० एकड़ भूमि और एक बड़ी राशि हरियाणा सरकारको देनेको तैयारहैं. अभीतक इस प्रस्तावपर हरियाणा सरकार ने समुचित ध्यान नहीं दियाहै. यदि हरियाणा राज्य इसबातपर अपना ध्यान केन्द्रितकरदेकि उसके राज्यमें नौकरीका पेशाकरनेवाले युवक कम तैयारहों और कृषि-बुद्धिजयी युवकही शतप्रतिशत तैयारहों, तो सारे भारतमें हरियाणाही सर्वविजयी नागरिक तैयारकरनेका अमरभाव राष्ट्रमें भागीरथी गंगाकीतरह प्रवाहितकरसकेगा. लेकिन इसकेलिए यह निहायत जरूरीरहेगाकि जो युवक कृषिकॉलेजोंसे पासकरकेनिकलें, वे राजकीय नौकरियोंमें न रखेजाकर, सामूहिक खेतीके फार्मोंका नेतृत्व करनेकेलिए नियुक्तकियेजायें . . .काश, देवराला इस दिशामें पहलकरसके.

## नये स्कूल-भवनकी रचनामें उल्लेखनीय दान-राशि

ग्राममें कुआं ग्रामीणोंको दीर्घजीवन प्रदानकरनेवाला यदि अमृत-घट होताहै, तो आदिकालसे यह सत्य शाश्वत नियमरहाहैकि गुरुपाठशालायें ग्रामीणोंकेलिए वाचा-तूणीर बनकररहीहैं, कभी न रिक्तहोनेवाले तूणीर. वाचा केवल व्यक्तिको वाचालही नहीं बनाती. वह मूलमें व्यक्तिको चिंतनशील और संस्कारवान बनातीहै. देवरालाके बालकोंको पहले देवराला ग्रामसे बाहर जाकरही अक्षरज्ञान या स्कूली शिक्षा प्राप्तकरनेकी विवशता भोगनीपड़तीथी. यह आनंदका विषयहैकि देवराला ग्रामके समर्थ ग्रामीण जनोंने अपने बालकोंकी

समुचित शिक्षाकेलिए एक सार्वजनिक यज्ञ रचानेका निर्णयलिया. यह सार्वजनिक यज्ञ एकप्रकारसे 'गूण-भट' में एकसाथ मिलकर हाथ-देनेकाही यज्ञ था. सभीने अपनी सामर्थ्यभर एक स्कूली कोश तैयारकिया और सभीने उसमें कम-अधिक दान दिया. जब देनेका प्रश्न आया, तो जिस वंशकी हवेली गांवके बीचमें हो, और जिस हवेलीकी छतपर बनाहुआ मंदिरका ध्वज सब दिशाओंसे दिखाईदे, उसकी सामर्थ्यका अंदाज किस नापसे लगाया जाये. यह अंदाज लगाना न पड़ा. तीनों देवरालिया बन्धुओंने मिलकर ५१,००० की एकमुश्त राशि इस स्कूलके कोशमें अपनीओरसे विनयभावसे समर्पितकी और स्कूल देखतेदेखते बनकर तैयारहोगया. अब देवरालाके बालकोंको गुरुगृहगमनकी पैरतोड़ यात्रा दूर स्कूलोंकेलिए नहीं करनीपड़ती. जिन व्यक्तियोंने इस स्कूलके निर्माणमें आर्थिक अनुदानदियाहै, वे सत्य रूपमेंही इस ग्रामके पूर्वजोंमें सदाही श्रद्धाकेसाथ स्मरणकियेजातेरहेंगे. पहले केवल संत-महात्माओंकी स्मृति गांवमें रक्षितरहतीथी ; अब आजकी पीढ़ी, जोकि शिक्षितहै, शिक्षाकोषकेलिए अनुदानदेनेवालोंकी स्मृति रक्षितकरेगी. जब हमारे आदेशसे फोटोग्राफरने स्कूलके प्रार्थना-प्लेटफार्मपर फूलचन्दजी और श्रीनिवासजीको खड़ाकर फोटोलिया, हमें सत्य अनुभूतिहुईकि इससमय इस हाईस्कूलके आगे ग्रामके दो ज्येष्ठ नागरिक खड़ेहैं, जिनके उदात्त हृदयोंमें देवरालाका हित सर्वोपरि जीवनसाधनाका दीपित दीपबनकर आलोक फैलारहाहै.

जब हम स्कूलका निरीक्षण कर आगेबढ़े, हमने मुखरभावसे शुभकामना प्रकटकीकि वह शुभ दिन जल्दीही आये, कि यह हाईस्कूल ग्राम-अंचलोंको प्रगाढ़ भुजबन्धनमें ग्रस्तकरनेवाला लोकप्रिय कॉलेजबने.

## ग्रामीण-अंचलोंका आधुनिक वरदान : अस्पताल भी देवरालामें मूर्त्तिमान

अब हम देवराला-भिवानी सड़कपर, हाईस्कूलसे आगेबढ़कर, देवराला ग्रामके उस कोनेपर पहुंच जातेहैं, जहाँपर शीर्ष ध्वजकी-तरह 'सोहनलाल सिविल हॉस्पिटल' खड़ाहुआहै. यह शीर्ष ध्वज देवरालाके स्वाभिमानी अस्तित्वका ध्वजहै. तीनों देवरालिया बन्धुओंने अपनी शक्तिको एकजूट करतेहुए अपने पिताश्रीकी स्मृतिमें यह सिविल हॉस्पिटल भवन बनवाकर हरियाणा राज्यको समर्पित करदियाहै. जिससमय हरियाणा राज्यका जन्मभी नहीं हुआथा, उससमय पूर्वी पंजाबके मुख्यमंत्री सरदार प्रतापसिंह कैरोंने इस हॉस्पिटलका उद्घाटन-कियाथा. इस हॉस्पिटलका भवन तो देवरालिया बन्धुओंने बनवाकर दियाहीहै, यहाँपर जितने औजार और डाक्टरोंके निवासयोग्य निवासभीहैं, वेभी इन्होंनेही अपने अनुदानसे दियेहैं. आज लोकतंत्रमें वह ग्राम बड़ा सौभाग्यशाली मानाजाताहै, जहाँका कोई सौभाग्य-देवता तुल्य ग्रामीण ग्रामवासियोंके सामूहिक हितोंकेलिए एक हॉस्पिटलका निर्माणकरवादे. फूलचन्दजी और श्रीनिवासजी आज देवराला ग्रामके ऐसेही सौभाग्य-देवता तुल्य उत्तम मनुजहैं. इस हॉस्पिटलका उद्घाटन सन् १९६० में हुआथा. दानधर्मकी दृष्टिसे ग्रामोंमें हॉस्पिटल बनवाना श्रेष्ठ दानका परिचायकहै.

## ग्वैस्ट-हाऊस और सेवासदन

जब हम वापस हवेलीपर लौटतेहैं, तो देवरालासे विदालेनेकी तैयारीकरतेहैं. इस बीच हम हवेलीके सामने बनेहुए ग्वैस्ट हाऊसका निरीक्षण भाई श्रीनिवासजीकेसाथ करनेजातेहैं. यह एक आधुनिक शैलीका ग्वैस्ट हाऊसहै. इसमें बिजलीकी फिटिंग है. इसमें पानीका एक भूगर्भ-स्थित ऐसा टांकाहै, जिसमें प्राय: वर्षपर्यन्त शुद्ध जलका भंडार रक्षितरहताहै. इस ग्वैस्ट हाऊसमें विवाह-शादियोंमें काम आनेवाला वस्तुभंडार सुरक्षितरखागयाहै. यदि गांवमें एकसाथ ५ बारातें आजायें, तो भी उनकी आवश्यकतायें यहाँका वस्तुभंडार पूरीकरदेसकताहै. एकसाथ ५१ निवारके पलंग कतारसे लगे हुएहैं. कड़ाहे, बड़े बर्तन, परोसगीरीका सामान और दरी-जाजम आदि सभीकुछ यहाँहैं. जबतक किसी वंशमें उत्तम परिवार-पालकोंका बाहुल्य नहीं होता, तबतक उस वंशमें व्यापक ग्रामहितोंका संस्कार सुपुष्ट नहीं होसकता. ग्रामकेलिए समर्पित इतना उत्तम ग्वैस्ट-हाउस और इतना विशाल वस्तुभंडार इसबातका प्रमाणहैकि देवरालिया बन्धुओंमें ग्राम-पालनके सर्वश्रेष्ठ उदात्त संस्कार आदर्शरूपमें लहरातेहुए मिलेंगे. मैंने सहसाही श्रीनिवासजीसे विनोदकिया, "क्या आपने देवरालामें विवाह-भवनकेरूपमें यह ग्वैस्टहाउस इस स्मृतिमें बनवायाहै, क्योंकि आपके ५ पीढ़ीपहलेके बड़े दादाने इसी देवराला ग्राममें आकर तोरण-विजयकीथी !" श्रीनिवासजी इस विनोदपर सिर्फ मुस्कराकररहजातेहैं.

देवरालिया-बन्धुओंके आदि पूर्वज रूड़ारामजी देवरालाके निकट एक ग्राममें रहतेथे. वहाँके ठाकुरसे जब अनबनहोगयी, तो वे यहाँ चलेआयेथे, क्योंकि देवरालामें उनका श्वसुरगृहथा. फिर सदाके लिए वे यहीं बसगये. उससमय चाहे वे घर-जंवाई न ही बनेहों, लेकिन 'ग्राम-जंवाई'केरूपमें उनकी प्रचुर रक्षाकीगयीथी. आज उसी महत उपकारके उपलक्षमें देवरालिया बन्धु निरन्तर कृतज्ञताज्ञापन करतेहुए नयेनये रूपोंमें उस उपकारका बदला चुकायेजारहेहैं, देवरालाके किसी न किसी ग्रामहिताय कार्यक्रमको हाथमें लेकर ! भगवान ऐसे ग्राम-जंवाई सभी ग्रामोंमें एकएक दें ! !

लेकिन अबतो देवरालाका कोईभी ग्राम-परिवार इस इतिहास-गाथासे परिचित नहीहै. यह सिर्फ इतनाभर जानताहैकि देवरा-लिया परिवार यहींका पुराना बाशिंदाहै.

ग्रामग्रामके परिवारोंमें प्रवासका नया अध्याय कैसेकैसे चित्रविचित्र कारणोंकेबलपर रचितहुआहै, उसका यह एक अश्रुत उदाहरणहै. यह हर्षका विषयहैकि सन् १९७४ में सिविल हॉस्पिटलकेपासही श्रीजुगलकिशोर सेवा-सदन नामसे, जुगलकिशोरजीकी स्मृतिमें, अब देवरालामें एक धर्मशालाभी तैयारकरवादीगईहै.

## हरियाणाके अग्रवाल वैश्योंके इतिहासका एक नवीन तथ्य उद्घाटित

देवरालासे विदाहोनेका क्षण उपस्थितहुआ. चलनेसे पहले भोजनकियागया. स्नेह-विगलित स्वरमें और स्निग्ध दृष्टिसे भाई फूलचन्दजी और श्रीनिवासजीने ग्रामीण आत्मजोंसे और आत्मीय बन्धुओंसे विदाली. हमनेभी अल्प परिचयकी ऊष्मासे भरे हृदयसे सबसे विदाली. कार झुंझनूंकीओर रवानाहोगयी. बाहर बदलियां अपनी क्रीड़ा रचरहीहैं. कुछ देरपहले बड़ी सुहानी वर्षा हुईहै. सारा व्योम वर्षाका संदेश लिये मीठी घनगर्जनाकररहाहै. शीतल समीरके झोंकोंसे हम स्फूर्तहोतेहैं. एक आनंदलहरीकी तरंगोंपर हम आरूढ़होजातेहैं. कार फुलस्पीडपर झुंझनूंकीओर बढ़तीहुई देवरालाको जल्दीजल्दी मीलोंपरे छोड़नेकी उतावली दिखानेलगतीहै. आज झुंझनूंमें राणीसतीका मेलाहै. वहाँ हम सभी दर्शनकरेंगे और फिर रातको दिल्ली पहुंचजायेंगे.

इन दोदिनोंमें एक बड़ा तीर्थ हमारे जीवनका होगयाहै. देवरालिया परिवारका निकटतम दर्शन-अध्ययन पूर्ण होगयाहै, हरियाणा-राजस्थानकी सीमा-संधिका भौगोलिक अन्तर्दर्शनभी हाथलगाहै. शेखावाटीके रेगिस्तानने देवराला ग्रामतक अपनी दीर्घ बाँह बढ़ानेमें आतुरताका परिचयदियाहै. इस सीमापर रहकरभी देवरालाकी जनभाषा ठेठ हरियाणवीहै. इसका मूल कारण यहीहैकि देवरालाका सांस्कृतिक, व्यापारिक, ऐतिहासिक सम्पर्क सदाही उस भिवानीसेरहाहै, जोकि बहुतपुरानेसमयसेहरियाणाकी व्यापारिक राजधानीरहनेका सौभाग्य अपनी मुट्ठीमें केन्द्रीभूतकरके रखतीरहीहै. सन् १९५९ मेंभी हमने हरियाणाकी व्यापक अध्ययन-यात्राकीथी. इस देवराला-यात्रामें हमें एक नया सूक्ष्म मर्म हरियाणाके इतिहासका सहजमेंही सुलभहोगयाहै. यदि अग्रोहा अग्रवाल वैश्योंका मूल नाभिनालहै, तो भिवानी-देवराला ग्रामांचलका वृत्त उन अग्रवाल वैश्योंका मूल नाभिनालहै, जो ८वीं ९वीं सदीसे, बौद्धकालके तिरोधानके बादसेही, इसी अंचलकी एक लघुपरिधिमें स्थान-परिक्रमा अवश्यकरतेरहेहैं, लेकिन इस अंचलकी भूमिसे अपने मूल नाभिनालका विच्छेद नहीं करपायेहैं.

## देवरालाके निकट बहल एक बड़ा गाँव, एक बड़ा ऐतिहासिक तथ्य

देवराला अपने ग्रामांचलकी एक बड़ी परिधिमें एकान्त ग्राम नहींहै. यह अलग-थलग ग्रामभी नहीं है. राजस्थान-हरियाणाकी सीमापर देवरालाकेसमानही बहल ग्रामभी बसाहुआहै. बहुतसे अग्रवालोंने , जो बहलसे निकलकर परदेशमें धनार्जनकरनेमें सफलहुएहैं, अपनेको बहलवाला नाम से प्रसिद्धकियाहै. इसी बहलमें पिलानीसे साबुओंका एक परिवार निकलकर आबादहुआहै, और साबुओंने पिलानी व बहलमें अपनी दानपरम्पराओंसे कुछ निर्माणभी कियाहै. ये साबू माहेश्वरीजातिके एक उत्तम परिवारहैं. किसीसमय यह बहल बीकानेरकी सीमाके अन्दर स्थितथा, यह जनश्रुति मिलतीहै. बीकानेरराज्यने यहाँपर अपना एक गढ़भी निर्मितकरवायाथा. उस गढ़की एक-दो कहानियाँभी सुननेको मिलजातीहैं. पिलानी-लुहारू रोडपर, भिवानीसे ९ मीलचलकर, दायींओर मुड़नापड़ताहै, जहाँपर यह बहल बसा हुआहै. बीचमें देवरालाका रास्ता दायें हाथको मुड़जाताहै, कहनेको बहल और देवरालाकी दूरी कुछ अधिक नहीं है. दोनोंके वैवाहिक रिश्तेभी कुछ इसीतरह गुंथेहुएहैं, जिसतरह वंदनवारकी झंडियोंमें लाल-पीले-नीले-हरे-सफेद सातों रंग रंगीली बहारदेनेलगतेहैं. एक मोटे अंदाजसे भिवानी-बहलमें ३६ मीलका अंतरहै. इसीकेपास झूंपा गांवहै. लेकिन बहलका नाम चलपड़ाहै, क्योंकि बहलके बहलवाला, पचीसिया, साबू आदि अनेक वैश्यपरिवारोंने बहलसे निकलकर कलकत्तामें और बम्बईमें अपने वंशका और इस ग्रामका एक सुनाम स्थिरकर-लियाहै. इसी बहलसे होकर भिवानी-बीकानेरका व्यापारिक मार्गथा. पिलानीसे बीकानेरकेलिए जो व्यापारिक टाँडे जायाकरतेथे, वेभी बहलसेहोकर गुजराकरतेथे. बहलसे बीकानेरका प्रमुख सीमास्थित व्यापारिक नगर राजगढ़भी सिर्फ १५ मीलपरही स्थितहै. इधर विगत दोसौ वर्षोंसे लुहारूका अपना व्यापारिक महत्वरहाहै और वहभी पिलानी-बहलकेबीचमें व्यापारियोंका एक मुख्य पड़ावरहाहै. तो लुहारू-राजगढ़-भिवानीके त्रिकोणमें बहल व देवरालाने एक लाभांशतो पायाहीहै, धाराधार चलनेवाले व्यापारिकमार्गकी समृद्धिका अंशभी पायाहै. ऐसेही महत्वके परिप्रेक्ष्यमें बहल जिन अनेकलोगोंकी ससुरालबनाहुआहै, उनमें एक भाई फूलचन्दजी देवरालियाभीहैं. लेकिन यह रहस्य आपने नहीं बताया. झुंझनूं विदाहोनेसेपहले, फूलचन्दजीका आग्रहरहाकि बहल और देखलीजिये. तब भाई श्रीनिवासजीने चुपकेसे एक गहरा विनोदकरतेहुए कहाकि बरुआजी, भाई बहल इसलिए दिखानाचाहतेहैं, क्योंकि वह इनकी ससुरालहै. भाई फूलचन्दजी और श्रीनिवासजी कभीकभी परस्परमें मुक्तभावसे मीठा विनोदकरतेहैं. यह विनोदसुनकर फूलचन्दजी विह्वलहोगये और हल्केसे मुस्कराकर बोले, "सोतो हैही भाई. वहाँ तोरण मारीहै, यह कोई भूलनेकी चीजहै !"

जोबात देवरालामें साफतौरपर देखनेको न मिली, वह बहलमें मिलजातीहै. देवरालामें खांटी हरियाणाकी लाठी-ठोक कड़क और धसक बोलीमें, व्यवहारमें, साफेके बंधेजमें और उठबैठमें मिल जातीहै; बहलमें राजस्थानके वैश्योंकी रीति-परम्पराओंका असर ज्यादा गहरा चढ़ाहुआहै, यहाँकी हवेलियोंकोदेखकर पहली भ्रांति यहीमिलतीहैकि हम राजस्थानके किसीगांवमें पहुँचगयेहैं. शायद यह असर काफीसमयतक बीकानेर-सरहदमें रहनेकेकारण रहाहो. देवरालामें जैसे मूंगीपा और हृदयराम आदि संतमहात्मा हुएहैं, उसीतरह यहाँभी एक महात्मा हुएहैं, उनका धूणा अभीतक यहाँपर लोकमान्यहै. हर ग्राममें एकदो संतोंके मठ-मंदिर रहनेसे प्रमाणमिलताहैकि डेढ़सौ वर्षपहले यहाँपर अच्छा जंगलथा. भाई फूलचन्दजीने इस धूणेका परकोटा पक्काबनवाकर दियाहै. अब एक धर्मशालाभी इसीके अन्दर आपने बनवाकर दीहै. बहलमें हम सबसेपहले फूलचन्दजीकी ससुरालमें गये और आपकी सासूजीके हाथका नाश्तापानी ग्रहणकिया. वे वृद्धाहोगयीहैं, लेकिन अपने ज्येष्ठायु जामातासे अभीभी घूंघटकरतीहैं ! बहल देवरालासे लम्बा गांवहै. बड़ी आबादीहै. अभीभी

व्यापारकी अच्छी बड़ी मंडीहै. अच्छे सेठ रहतेहैं. नई हवेलियाँभी काफी बनचुकीहैं. चार घंटे बहलदेखनेमें लगे. जब बहलसे विदा-हुए, हमने भाई श्रीनिवासजीको एक मर्मकी बातबताई, "बहल इसलिए बड़ागांव बनगयाहै, क्योंकि यह पिलानी-राजगढ़के मूल व्यापारिक मार्गपर मौजूदहै. देवराला इसलिए लघुसीमाओंका गांव रहगयाहै, क्योंकि वह इस मार्गकी चौहद्दीसे दूर जापड़ाहै."

श्रीनिवासजीमें यह सिफतहैकि बातका मर्म जल्दी पकड़लेतेहैं और गंभीररहकरभी मीठा विनोद इतने चुपकेसे करदेतेहैंकि हमारे जैसे विनोदी व्यक्तिका अंगअंग गुदगुदीसे भरजाताहै. आपने हमारीबात सुनकरकहा, "छोटे-बड़ेतो गांव खैर होतेही रहतेहैं, लेकिन देवरालाके मर्दोंने यहाँ एकदोबार नहीं, कई बार आकर तोरण मारीहै !"

हमारेसाथ बहलके एक अच्छे सेठ धीरे-धीरे हमारी बात सुनतेहुए चलरहेथे. वेभी इस मीठी मारका आनंदलेतेहुए जोरसे हंसेहुए बिना न रहे...

श्रीनिवासजीके इस विनोदका अर्थ स्पष्ट करतेहुए भाई फूलचन्दजीने बतायाकि जुगलकिशोरजीभी यहीं बहलमें ब्याहेथे.

द्वितीय अध्याय

# देवराला ग्राममें जिंदलगोत्री अग्रवालोंका स्थानांतरण

## ४. शीलूजी : अग्रवाल वैश्योंके एक पूर्वज, जो अमरहैं

वंशकी पीढ़ी एकबातहै, वंशके किसी आदि पूर्वजकी फहरातीहुई कीर्ति-पताका एकदम दूसरे ढंगकी बातहै. विगत २६ वर्षोंसे काम करतेहुए, बारबार हैरानी हुआकरतीथीकि ९० प्रतिशत व्यक्ति अपने किसी पूर्वजकी विशिष्ट बात याद नहीं रखते. वे केवल अपनी पीढ़ीही याद रखतेहैं. लेकिन पीढ़ी सिर्फ ५ प्रतिशत व्यक्तिही यादरखतेहैं और आजसे आठ-दससाल पहलेतक ये पीढ़ियांभी घर-जोशीकी बहीमेंही लिखीहुई बन्दरहाकरतीथीं और विवाहशादीके समय दक्षिणादेनेपरही उनका नाम-श्रवण उसी तरहहोताथा, जिसतरह सत्यनारायणकी कथाकेदिन उसका वाचन किसी पंडितकेमुखसे होतारहाहै...

तो जातीय-प्रवासके इतिहासकी खोजखबरलेनेमें सिर्फ पीढ़ियांही मिलाकरतीथीं, भूलेभटके किसी एक परिवारमें किसी एक पूर्वजकी फुटकर या स्फुट चमत्कार-घटना सुनें, ऐसा सुखदसंयोग कमीकभी ही मिलाकरताथा. मेरी यह स्पष्ट धारणाहैकि सात-आठ पीढ़ी पहलेके किसी पूर्वजकी जनश्रुतियोंको सुनकर उसके युगकी प्रवासकथाके अनेक पहलुओंका स्वयंमेव उद्‌घाटनहोजायाकरताहै. इसतरहके उद्‌घाट-नका शायद सबसेपहला ठोस आधार हमें देवराला ग्राममें पहुँचनेपर, भाई श्रीनिवासजीके पूर्वजोंकी आदिकथा सुनकर हाथलगसकाहै. योंतो पीढ़ियोंकी अन्य जानकारियोंके परिपार्श्वमें हमें कुछ परिवारोंके आदिस्रोत १०वीं-११वीं सदीतक मिलतेहैं, लेकिन हरियाणामें जिससमय मराठोंने काफी लूटपाटका दौर-दौरा फैलारखाथा और औरंगजेब अपनी मृत्युकी आशंकामयी घड़ियोंमें दक्षिणभारतमें उलझाहुआथा, उससमय हरियाणामें अंगदीपैर जमाकर छोटेछोटे गांवोंमें अग्रवाल वैश्य वसेहुएथे, इसका अच्छा प्रमाण श्रीनिवासजीकी नवींपीढ़ीमें शीलूजी नामके एक पूर्वजका नामजानलेनेपर मिलजाताहै. ये शीलूजी यथार्थमें छठी पीढ़ीमेंजो मातामही हुकमावाईथीं, उनके प्रपितामहथे. शीलूजी सिंघलगोत्री अग्रवालथे और देवरालामें उनका निवासथा. देवराला नामसे यह ध्वनि मिलतीहैकि यहाँपर कोई प्राचीन देवरा पहलेथा. और उसी देवराके इर्दगिर्द यह ग्रामबसाहुआथा. शीलूजी यहाँपर किसी आसपासके गांवसे चलकर आयेथे और यहाँपर आकर बसेथे, यह इसतथ्यसे पताचलताहैकि इन शीलूजीसे पहलेकी अन्यत्र पीढ़ियाँ नहीं मिलतीं. वे इसलिए नहीं मिलतीं, क्योंकि शीलूजीके पुत्रपौत्रादिने पहलेके पूर्वजोंका नाम-स्मरण इसलिए जरूरी नहीं समझा, क्योंकि वे अपने किसी आदि ग्राममें बसेरहगयेहोंगे.

दूसरे तथ्यकेबारेमें जब हम विचारकरतेहैं, तो प्रश्न होताहैकि शीलूजी आखिर अपने पूर्वजोंके पुराने ग्रामका त्यागकरके देवरालामें आकर क्यों बसगयेथे ? क्या विवशता उनकेसामने आईहोगी. यदि हम एक मोटे अनुमानसे, पीढ़ियोंका तथ्यपूर्ण समयक्रम निर्धारित-करतेहुए यह तयकरलेंकि शीलूजीका जन्म सन् १७०६-१० की अवधिमें हुआथा, तो इसग्राम-स्थानांतरणके कतिपय कारणोंका एक स्थूल संकेत हमें मिलजाताहै. शीलूजीने लगभग २०-२५ वर्षकी आयुमें, सन् १७३०-३५ के आसपास किसी ग्रामसे उठकर देवरालामें बसावटकी-होगी. उससमयतक दिल्ली-शासनसे विद्रोहकरतेहुए शेखावाटीमें नवलगढ़, सीकर आदि १० नये शहर बसचुकेथे और इन्हें उन शेखावत सामंतोंने बसायाथा, जिनके पिता शार्दूलसिंहजीथे और जिन्होंने फतेहपुर-झुंझनूंकी नवाबीका उच्छेदनकरदियाथा. हमें लगताहैकि इन्हीं नये नगरोंकी बसावटके दौरमें ऐसेही किसी सामंतने शेखावाटीसे या बीकानेरकी मूल शाखासे बाहर पैरफैलाकर देवराला ग्रामकी नयेसिरेसे बसावटकीहोगी और यहाँकी बस्तीमें आसपासके वैश्योंको निमंत्रण देकर बसनेकेलिए बुलायाहोगा. क्योंकि आज देवरालामें श्रीनिवासजीकी हवेली गांवके बीचोंबीचमेंहै, इससे पताचलताहैकि नया गांवबसनेकेसमय शीलूजी शायद सबसे पहले वैश्यरहेहोंगे, जो यहाँआकर बसेथे. क्योंकि उनकी आर्थिकस्थितिभी अच्छीरहीहोगी, इसलिए उन्हें गांवके बीचोंबीच बसनेकीजगह दीगयीथी ! हमें देवरालामें पूरा समय नहीं मिला, न ही उचित व्यक्ति सामने आये, नहीं तो देवराला-ग्रामके पुराने राजपूत-सामंतोंकी पीढ़ियोंसे यह तथ्य अवश्य पताचलताकि किस सामंतने यह ग्रामबसायाथा.

शीलू नामकी परम्परापरभी हमको विचारकरना अपेक्षितहै. शीलू, कालू, डालू (डालूराम), मालू, मोलू, बालू आदि कुछ नामहैं, जो एकही तुक और एकही पद्धतिसे हरियाणामें व्यवहार-प्रचलितरहेहैं. अग्रोहाके इतिहासमें एक रिसालूका खेड़ाहै, जहाँपर एक इतिहासपुरुष शीलू नामसे मिलतेहैं. चन्द्रसिंहको चन्द्रूनामसे हरियाणामें बोलाजाना प्रियबानगीका कारणरहाहै. एक नाम इसीतरह चतरू चलताहै. तो इन नामोंके पीछे शुद्ध रूप अवश्यरहेहोंगे. एकदम उनका अंदाजसे वर्णनकरना प्रमादही कहाजासकताहै. पर, इतना अवश्यहैकि शुद्ध संस्कृतनिष्ठ शब्दनामोंपर आधारित पर्यायनामोंका लोकांचलमें ऊकारान्तमें प्रचलित सम्बोधन रूप सभीको प्रियरहाहोगा; यह लोकपद्धतिका एक व्यावहारिक रूपभी बनगयाथा. अग्रवालोंके आदि वंशसंस्थापक अग्रसेन या उग्रसेन अपने युगकी प्रचलित संस्कृत परम्पराका एक शुद्ध संस्कृत-निष्ठनामहै और उसीकेबादसे अग्रवालजातिमें संस्कृतनिष्ठनामोंकी परम्परा १७वीं-१८वींसदीतक विद्यमानरहीहै. शीलू ऐसेही किसी उत्तम संस्कृत शब्दका अपभ्रंश रूपहै. शीलूजीके दो पुत्रहुए : मोलू और नत्थू. ये दोनोंनामभी विशुद्ध संस्कृत परम्परामें हैं, लेकिन हरियाणाकी लोकभाषाका रंगपाकर अपभ्रंशरूप पागयेहैं.

शीलूजीने देवरालामें अच्छा व्यापार-विणजकियाथा. आप दो पुत्रोंके पिताहुए : मोलू और नत्थू. आदरकी दृष्टिसे ग्रामीण जन इनको मोलूरामजी और नत्थूरामजी बोलतेहैं. सिर्फ इतनाही सूत्र हाथलगताहैकि व्यापार-विणजके अतिरिक्त शीलूजीके पुत्रोंनें कृषि-भार अपने सबल कंधोंपर और संभाललियाथा. १८वींसदीमें, मुगलसाम्राज्यके अधःपतनकेबाद, हरियाणामें एकतरहसे हरितक्रांतिका दौर उपस्थितहुआथा. बहुतबड़े पैमानेपर लोग खेतीकरनेलगेथे. यह आनंदका विषयथाकि खेतीकी फसलमें अनाजकी बालोंकीतरहही, शीलूजीके ११ पौत्र और एक पौत्री हुई. और, यह पौत्री ऐसी सौभाग्यवतीहुईकि इसकी रत्नप्रसू कुक्षिसे यद्यपि एकही पुत्र खुशालीरामजीका जन्महुआ, लेकिन इस पुत्रने आगेका, पोते-पोतियोंका, बहुसंतति पीढ़ियोंका क्रम अबाधगतिसे प्रारंभकरदिया. इन्हीं खुशालीरामजीकी पांचवीं पीढ़ीमें श्रीनिवासजीहुएहैं.

## ५. रूड़ारामजी जिंदल, सामंती अन्यायका दमनकरनेवाले मर्द

हुकमाबाईका विवाह बुचास ग्राममें रूड़ारामजीसे हुआथा. हुकमाबाई स्वयं बलिष्ठ मानस और कायिक सौंदर्यकी मानसीथी. पति उसे उससेभी अधिक, हरियाणाके शौर्यके प्रतीक निर्भय पुरुषकेरूपमें प्राप्तहुआथा. राजस्थानके सामंतोंको जैसेही १८वीं सदीके प्रारंभमें राज्याधिकार प्राप्तहुए, उनका मानसिक संतुलन डांवाडोलहोगयाथा और वे प्रजारंजन व प्रजापोषणका मूल उद्देश्य भूलकर, प्रजापीड़नमें और शोषणमें व्यस्तहोगयेथे. बूचास ग्राममेंभी एक ऐसाही सामंत अपना अधिकारकिये बैठाथा. एक दिन उसने रूड़ारामजीको, यह जानकरकि वैश्यहै और इससेभी धनका दोहन कियाजानाचाहिए, उसे कुएँसे पानीभरनेपर ताड़नादी. हरियाणाके मर्दको ताड़नादेना और उसकी जवांमर्दीको ललकारना बराबरहीरहाहै. रूड़ारामजीने ताड़नाको उससमयतो स्वीकारकरलिया, लेकिन हृदयतः उस चुनौतीको अनुत्तरित नहीं रहनेदेनाहै, यहभी निर्णय मनमें लेलिया. एकदो दिनोंमेंही चुपचाप उन्होंने अपनी पत्नीको और अपनी घरकी सम्पत्तिको अपनी ससुरालमें, देवरालामें, भिजवादिया और वहाँके ग्राम-भाइयोंसे परामर्शकिया. उनसे उन्हें भरापूरा समर्थनमिलाकि अन्यायका प्रतिशोध लोगे, हमसाथदेंगे. रूड़ारामजीने वापस बूचास ग्राममें जाकर एकदिन सुबहही अपनी लाठीके एकहीवारसे उस सामंतका काम तमामकरदिया और अपने तेज ऊँटपर आरूढ़होकर वे देवराला पहुँचगये. देवरालाके ग्रामीणोंने ऐसा प्रतिशोध लियेजानेपर हर्ष मनाया और रूड़ारामजीको ग्राम-जंवाईके रूपमें अपनेही ग्राममें रहनेका बन्दोबस्तकरदिया. देवरालाके सामंतने अपने ग्रामके, इसविषयमें, बंटीहुई जेवड़ी तुल्य भाव देखेतो सबके समर्थनमें स्वयंभी साथहोलिया. बस, स्थायीतौरसे, रूड़ारामजी और हुकमाबाई देवरालामें रहनेलगे. देवराला ग्राममें सिंघल गोत्री अग्रवालोंके अतिरिक्त अब जिंदल गोत्री अग्रवाल परिवारभी इस घटनावश आकर बसगया. दोनोंही पतिपत्नीने अच्छी उमर पायी. सदाही देवरालाकी सुकीर्तिका ध्यानरखा. खेतीबाड़ीमें अपनेको लगालिया. अपने पोते गंगारामकोदेखकरही, इस दम्पतिने इस लोकको अपना अन्तिम प्रणामदिया.

## ६. उन्नीसवीं सदीका उत्तरार्द्ध दरवाजेपर आतेही चौथीपीढ़ीद्वारा धनार्जन-प्रवास

रूड़ारामजीके पुत्र खुशालीरामजीका जन्म सन् १७९५ के लगभग देवरालामेंही हुआथा. खुशालीरामजीभी एकही पुत्रके पिताहुए : गंगारामजी, जिनकाजन्म लगभग १८२२ में हुआथा. लक्ष्मणदासजी इन्हीं गंगारामजीके पुत्रहुए, आपका जन्म सन् १८४७ में हुआ. लक्ष्मणदासजीकी पीढ़ीतक यह परिवार स्थायीरूपसे खेतीबाड़ी और दूकानदारीमें व्यस्तरहा. लक्ष्मणदासजीभी युगकी परम्पराके अनुसार दाढ़ीसे शोभितरहनेकी परम्पराका पालनकररहेथे. लक्ष्मणदासजीके बाद, आपके परिवारमें सोहनलालजी और मूंगारामजी[1] हुए. इससमयतक स्थिति यह होगयीथीकि देवरालामें प्राप्त जीविकाकी सीमितमात्रासे संतोष नहीं होपाताथा.

१. मूंगारामजीका विवाह बहलकेपास बीदवाण ग्राममें दाखाबाईकेसाथ हुआथा. लेकिन यह कुलशीला पत्नी विवाहके २-३ सालबादही देवरालामें आईहुई प्लेगसे आक्रान्तहोकर, सन् १८९७ में कालकवलितहोगयीथी. इसकेबाद मूंगारामजीने अपना दूसरा विवाह नहीं रचाया. मूंगारामजीने ४२ वर्षकी आयु पाई और सन् १९२० में निधनको प्राप्तहुए.

धनकमाने और अपने अस्तित्वकी रक्षाकेलिए हरियाणासे और राजस्थानसे एक बड़ीसंख्यामें वैश्योंका प्रवास, १८५० केवादसे दिल्ली-कलकत्ता-बम्बईकी तरफ होनेलगाथा. संचारके साधन कमसेकम थे, समाचार-प्रसारके साधन कमसेकमथे, फिरभी राजस्थानके धुरदक्षिण सिरोही अंचलसेलेकर हरियाणाके धुरउत्तर कुरुक्षेत्रतकके लोग एक लीकबांधकर प्रवासमें निकलतेजारहेथे. देवराला जैसे एकान्त ग्राममें सोहन-लालजी पहले व्यक्तिथे, जो प्रवासमें निकलेथे, यह नहीं कहाजासकता. प्रवासमें निकलनेसेपहले उनको एक मानसिक आघात पहुँचाथा और वे उससे इतने व्यथितहुएथेकि १० वर्षकी आयुहोतेहुएभी, अपनेको रोक नहीं पायेथे . . . प्रवासके कष्ट उन्हें शिरोधार्यहोगें, लेकिन कमाऊ पूत उन्हें बननाहीहोगा. इस मानसिक संघातकी घटना इसप्रकार बीतीथी : सोहनलालजी बालपनसेही ऊँटोंकी कतारलगानेका काम करनेलगेथे, उसमें उनका मनभी रमनेलगाथा. जब वे ऐसीही एक कतारलेकर एकबार भिवानी पहुँचे, तो वहाँपर उनकी वहनथीं. वे उनसे मिलनेगये. बहनने अपने भाईसे बातभी मनलगाकर न की और उन्हें जो खिचड़ी परोसी, वह ठंडीथी, शायद रातकी बनीहुईथी . . . ठंडी खिचड़ी घरके मेहमानकोतो कभी नहीं खिलायीजाती. बस, सोहनलालजी उसीसमय उठगये, देवराला वापस आये और प्रवासमें निकलगये. अब बहनके घरपर तभी आयेंगे, जब कमाऊ पूत बनलेंगे, ताकि बहनोई और बहनभी उसको सही मानदे. तो, कारण यहथा. लेकिन सही स्थिति यहीथीकि चाहे कारण दूसराभी रहाहोता, सोहनलालजी जैसे चेता मानसके युवक इस प्रवासकी आंधीमें स्थिर रह नहीं सकतेथे, अपने बापदादोंका जंघाबल उन्होंने विरासतमें पायाथा. और विरासतमें १००-२०० कोसकी मुसाफरी और बिणजविपारकी चौकसीभी उन्होंने पायीथी. प्रवासका शोर उसीतरह आसमानमें गूंज रहाथा, जिसतरह अकालके दिनोंमें किधर पानी और दोमुट्ठी अनाजमिलेगा, इसका शोर बिना बोले और सुनाये, व्योमके कलेजेको टंकारतारहताहै . . .

सोहनलालजीकी प्रवास-कथाके आदि प्रेरणास्रोत आपके चाचाजी दयालचन्दजी रहे, जिनका जन्म सन् १८५७ में हुआथा. लक्ष्मणदासजीतो देवरालामेंही खेतीबाड़ीकरतेरहे, लेकिन उनके छोटे भाई दयालचन्दजी सन् १८७७ के आसपास, २० वर्षकी आयुमें, दार्जिलिंग चलेगयेथे, जहाँपर बड़वेवाले 'मोहनलाल शिवलाल'की फर्म हार्डवेयरका कामकररहीथी. यह फर्म दार्जिलिंगमें सन् १८६५-७० से कामकररहीथी. दयालचन्दजीकी आयु यद्यपि २० वर्षकी होगयीथी, लेकिन आपका विवाह नहीं हुआथा. आपके इस कुंवारेपनेके पीछे हरियाणाकी उस घनघोर दरिद्रताका अभिशाप मूल कारणथा, जो सन् १८०० के बादसेही, हरियाणामें मराठोंकी लूटपाट और ब्रिटिश सेनाओंके निरन्तर हरियाणा-पंजाबमें अभियानकेकारण व्याप्तहोगयाथा. इसी संक्रामक गरीबीकेदौरमें कन्यावान पिता ऐसेही युवकोंको अपनी कन्यायें दियाकरतेथे, जो समर्थ और कमाऊ पूतहों. अन्यथा लड़के कुंवारे घूमतेथे. दयालचन्दजी कमाऊपूत बननेकेलिएही दार्जिलिंग गयेथे, लेकिन दार्जिलिंग पहुँचकर, आपके जीवनदर्शनमें एक बड़ाभारी अन्तर आया, और आपने विवाहादिकी बातभी पूरीतरह भुलादी. केश रखलिये, और दाढ़ीबढ़ाली. अपना बाना विरक्त युवकों जैसा बनालिया. सिर्फ फर्मपर मुस्तैदरहते, अपना पूराकामकरते और शेषसमय भगवद्-आराधनमें लगाते. इसतरह आपने शांतिके साथ पूरे २० वर्ष दार्जिलिंगमेंही व्यतीतकरदिये. फर्मके सेठलोग बड़वे ग्राममेंही रहाकरतेथे. वहींसे बैठकर वे दार्जिलिंगकी फर्मका संचालन दयालचन्दजी जैसे विश्वसनीय व्यक्तियोंकेसहारे चलायाकरतेथे.

आखिर एक मोड़ दयालचन्दजीके जीवनमें आया. जब इनकी आयु ४५ वर्षकी होनेआई, तो दार्जिलिंगमें किसी पंडितने इनसे कहाकि अब तेरा विवाह होगा, और इसीविवाहके निमित्त तू देश जायेगा. पहलेतो दयालचन्दजीको विश्वासही नहीं हुआ. आयु ४५ वर्षकी होनेआई, अब कौन उसका विवाह रचायगा. लेकिन संयोग ऐसाही आया और ये देशचलेगये. पहले देवराला न जाकर बड़वे ग्राममें गये, जहाँ उनके सेठरहतेथे. उन्होंने उसे देखकर बहुत हर्ष प्रकटकिया. मोहनलालजी और शिवलालजी आपसमें सगेभाईथे और युगकी रीतिके अनुसार दाढ़ीरखतेथे. अपने अंचलमें नामवर सेठथे. अग्रवाल वैश्यथे. हरियाणाके जिन अग्रवालोंने सन् १८६०-९० के बीच अच्छा धनकमाया और नामवरीपाई, उनमें 'मोहनलाल शिवलाल' फर्मकाभी नाम अग्रणी पंक्तिमें लिखाजायेगा. मोहनलालजीको संतानकी दृष्टिसे केवल कन्यायेंही प्राप्तहुईथीं. शिवलालजीके ज्येष्ठ सुपुत्र परसरामजी आगेचलकर रायबहादुरहुएथे.

तो, जब दयालचन्दजी बड़वे पहुँचे, उससमय दोनोंही सेठोंके, मोहनलालजी और शिवलालजीके मनमें यह विचार आयाकि इसकी उमर ४५ वर्षकी होगयी, अभीतक इसका विवाह नहीं हुआ. सो, इसका विवाह होनाचाहिए. ऐसीभी हमारी सेठाई क्या कामकी, कि हमारे प्रिय पात्र दयालचन्दजी कुंवारेही रहजायें ! उन्होंने दयालचन्दजीको भोजनपानी करनेकेलिए कमरेपर ठहरादिया. इधर संयोग ऐसा हुआकि एक कन्यापक्षके व्यक्ति आये और सेठोंसे कहनेलगेकि कोई अच्छासा लड़का बतायें. उन्होंने कहाकि आजही बतायेंगे. जब दयालचन्दजीने भोजनपानी करलिया, तो आग्रहकेसाथ उनकी दाढ़ी कटवादी और अपने प्रभावसे उस कन्यापक्ष वालेकी कन्याकेसाथ दयाल-चन्दजीका विवाह तयकरवादिया. प्रारंभमें कन्यापक्षवालोंने आपत्तिभीकीकि वर बहुतबड़ी आयुकाहै, लेकिन सेठोंने उस कन्यापक्षके व्यक्तिको रुपयेदेकर यह रिश्ता पक्काकरवादिया. दार्जिलिंगमें जिस पंडितने चार-पांच साल पहले भविष्यवाणीकीथी, वह सचनिकली. लेकिन उस पंडितने अधूरीही भविष्यवाणी कीथी, शेष इस विवाहके तत्कालबादही चरितार्थहुई. जैसेही विवाह रचाकर दयालचन्दजी सपत्नीक देवरालामें पहुँचे, उससमय वहाँपर प्लेग छाईहुईथी. जिसदिन नवपत्नी देवरालामें पहुँची, मूंगारामजीकी नवपत्नीका इसी प्लेगमें देहान्त-होगयाथा. तब ग्रामीणोंने दयालचन्दजीकी पत्नीको प्लेगकेकारण, उसीक्षण उसके पीहर वापस भिजवादिया, ताकि कहीं उसे प्लेगकी छूत न लग जाये. पति-पत्नीकी परस्परमें बात तक न हुई. और, इधर एकदिन, इस विवाहके आठ-दस महीनेबादही, दयालचन्दजीका शरीरभी चलागया. ४५ वर्षकी आयुमें विवाह हुआ, वहभी दाम्पत्य-सुखकी एक घूंट पिलानेवाला सिद्ध न होसका. निश्चितरूपसे यह हरियाणाके

उस महादुर्भाग्यकाही एक घटनाक्रमहै, जो १८९५-९६ के आसपास न केवल हरियाणामें बल्कि सारे देशमें परिव्याप्तथा. यह प्लेग बम्बई महानगरीसे प्रारंभहुईथी, और देखतेदेखते सारे देशमें फैलगईथी. १८९६-९७ में इसी महामारीके आतंक-दौरमें दयालचंदजी स्वर्गवासी-हुएथे. उनकी पत्नी इसतरह बालविधवाहोगयीथी...[१]

हरियाणासे जो प्रवास होरहेथे, उनमेंसे सभी सफल धनाढ्य सेठहोकर लौटे, ऐसे तथ्य कमही मिलतेहैं. दयालचन्दजीकी घटना यद्यपि एक असह्यरूपसे दुखदहै, लेकिन इससेभी अधिक शोचनीय घटनायें हरियाणाके प्रवासी अग्रवाल परिवारोंमें हुईहैं. यह सौभाग्यका विषयरहाकि देवरालामें इसतरहकी अपनेआपमें यह पहली और आखिरी घटनाही रही.

## ७. पाँचवींपीढ़ीमें सोहनलालजीने जीवनके सौभाग्यकी आसंदी अपने पुरुषार्थसे तैयारकी

लक्षमणदासजीका विवाह मताणी (बहलकेपास) हुआथा. सोहनलालजीका विवाह चौधरीवास (हिसारके पास) हुआथा. आपकी पत्नीकानाम मल्लीदेवीथा. १० वर्षकी आयुमें, मुसाफरीमें निकलकर, सोहनलालजीने अपने चाचाजी दयालचन्दजीकेपास दार्जिलिंगमें रहकर कुछ महीने कामसीखा. 'मोहनलाल शिवलाल' फर्मकी एक शाखा कलकत्तामेंभी स्थापितहोचुकीथी और उसकी देखरेख शिवलालजीके पुत्र परसरामजी बड़वेवाले कररहेथे. प्रथम विश्वयुद्धकी अवधिमें सोहनलालजी कलकत्तामें आगयेथे. इसी फर्मका काफी काम आपने सम्हाललियाथा. यहाँपर आपने सन् १९२५ तक दत्तचित्तहोकर कामकिया. इसके उपरान्त नौकरी छोड़कर, ८ वर्षतक आपने स्वतंत्ररूपसे बोरेका कामकिया. जब आपकी आयु ४८ वर्षकी होगयी, तो कलकत्ताके सक्रियजीवनसे अवकाशलेकर, आप १९३०-३२ में वापस देवरालाचलेगये और वहाँपर एक कपड़ेकी दूकानखोलकर, सुखी जीवन बितानेलगे.

सोहनलालजीका जीवन काफी सफलरहा. धनार्जनकी दृष्टिसे आपकीस्थिति सदाही अच्छीरही. संतानकी दृष्टिसे आप तीन पुत्रोंके पिताहुए. जीवनावधि आपने ५७ वर्षकी पाई, सन् १९४२ में जिससमय आपका स्वर्गवासहुआ, उससमय आपका घर पूरीतरह पुत्रपौत्रादिसे भराहुआथा और तीनों पुत्र देवराला-भिवाणी अंचलमें अच्छा धनार्जनकररहेथे. आपकी चारों कन्यायें हरियाणाके उत्तम धनाढ्य परिवारोंमें सुखद दाम्पत्यजीवन भोगरहीथीं. देवरालामें आपने अपने कर्मबलसे नई हवेलीका और एक कुएँका निर्माण करवायाथा. रूड़ारामजीकेबाद, पांचवींपीढ़ीमें, सोहनलालजीके जीवनका पुन्य इतना फलीभूतहुआकि आप, इस वंशमें, रूड़ारामजीकेबाद, सबसे अधिक श्रद्धास्पद पूर्वज मान्यहुएहैं.

आपकी ज्येष्ठ कन्या बनारसीबाईका जन्म सन् १९१३ में हुआथा. ये नलवामें रघुनाथरायजी भाऊकासे सन् १९२४ में परणी-गयीं[२]. सोहनलालजीके प्रथम पुत्र फूलचन्दजीका जन्म १९१८ में हुआ और सन् १९३२ में आपका विवाह बहलमें हुआ. आपके दूसरे पुत्र जुगलकिशोरजीका[३] जन्म १९२० में हुआ, और आपका विाह १९३४ में हुआ. आपके तीसरे पुत्र श्रीनिवासजीका जन्म १९२४ में मंगसिर सुदी तीजको हुआ, और आपका पहला विवाह १९३८ में दुलेड़ीमें श्योनारायणजी दुलेड़ीवालेकी कन्या शांतिकेसाथ हुआ. यह दुलेड़ी देवरालासे ७ कोसपर तुषामके पास है. यह कुलशीला पत्नी केवल ८ सालही जीवित रही. आपका पुर्नविवाह १९४८ में दुलेड़ीमेंही श्योनारायणजीके छोटे भाई रामस्वरूपजीकी कन्या परमेश्वरीदेवीसे हुआ. सोहनलालजीकी दूसरी कन्या चमेलीबाईका[४] जन्म १९२६में हुआ, और इनका विवाह हड़ौदीमें ओंकारमलजी अग्रवालकेसाथ हुआ. आपकी तीसरी कन्या जमनीबाईका[५] जन्म १९२८ में हुआ, ये नलवामें रामबिलासजी भाऊकाकेसाथ परणीगयीं. आपकी चतुर्थ कन्या कमलीबाईका[६] जन्म १९३० में हुआ, ये नलवामें दुरगाप्रसादजी भाऊकाके साथ विवाहीगयीं.

वैदिक ऋचाओंमें वैश्यकेलिए जितनेभी उत्तम संस्कारोंका विधान लिखागयाहै, वे सभी सोहनलालजीने अपने पौरुषसे और अपने अर्जित पुन्यसे प्राप्त व अर्जितकरलियेथे. ऐसा सौभाग्य २० वीं सदीके प्रारंभिक दशकोंमें हरियाणाके अग्रवाल-परिवारोंमें बिरलोंकोही प्राप्त होपाताथा. सोहनलालजीकी पत्नीका देहान्त आपसे एकही वर्ष पहले, सन् १९४१ में, ४५ वर्षकी आयुमें हुआथा.

१. इस बालविधवा पत्नीने ७० वर्षकी आयु पाई. सन् १८७० में इनका निधन हुआ. आपके निधनके समय, तीनों भाई फूलचन्दजी, जुगलकिशोरजी और श्रीनिवासजीने मिलकर देवरालामें लड्डुओंका काज (श्राद्धभोज) सम्पन्न कियाथा.
२. बनारसीबाई ४ पुत्र और ४ कन्याओंकी माताहैं. पुत्रोंके नामहैं : महाबीर, बजरंग, निरंजन, मुरारीलाल. कन्याओंके नामहैं : सावित्री, अंगूरी, रामेती, सुशीला. इनसबके विवाह अच्छे घरोंमें हुएहैं.
३. जुगलकिशोरजी ४ पुत्रोंके पिताहुए. आपके ज्येष्ठ सुपुत्र छबीलदासका विवाह सन्तलाल भोजाणियाकी कन्यासे हुआ. दूसरे पुत्र सत्य-नारायणका विवाह मोहनलाल शिवलाल फर्मके शिवलालजीकी पौत्री शशिकलासे हुआहै. तीसरे पुत्र भीमसेनका विवाह बाबूलालजी काजड़ियाकी कन्या किरणसे हुआहै. चतुर्थ पुत्र रमेशकुमारहैं.
४. चमेलीबाई ५ पुत्र और ४ कन्याओंकी माताहैं. पुत्रोंमें सत्यनारायण और तनसुखका विवाह होचुकाहै. बिमला और आनंदी इन दोनों कन्याओंका विवाहभी होचुकाहै.
५. जमनीबाई ३ पुत्र और ४ कन्याओंकी माताहैं. इनमेंसे पुत्र रामधारीका और कन्याओंमेंसे प्रेमा व कान्ताका विवाहहोचुकाहै.
६. कमलीबाई ७ पुत्र और १ कन्याकी माताहैं. इनमेंसे पुत्र ज्योतिका विवाह होगयाहै.

तृतीय अध्याय

# बुलंद दरवाजोंकी सांकल खोलनेवाले बुलंद-परवाज श्रीनिवास अग्रवाल

## ८. हरियाणाके सत्य स्वाभिमानकी रक्षाकरनेवाला कनिष्ठ पुत्र

राजस्थान और हरियाणासे प्रवासकरनेवाले वैश्योंकी जीवनपद्धतियोंका यदि हम सापेक्षअध्ययनकरें, तो एक सरस अन्तर सहजभावसे हाथलगताहै. यह अन्तर सु-खचित रेखाओंसे सुस्पष्ट नहीं कियाजासकता. सिर्फ, स्थूल निर्णयोंके आधारपर वर्णितही कियाजासकताहै. राजस्थानके जितने लोग प्रवासमें गये, उनमेंसे ८० प्रतिशत व्यक्तियोंने प्रारंभमें किसीकी नौकरीकी और फिर स्वयं समर्थहोकर अपना स्वतंत्र अस्तित्व स्थापितकियाथा. इसके समानांतर हरियाणाके ८० प्रतिशत व्यक्ति स्वतंत्र रहकर दलालीही करतेरहे, शेष २० नेही किसीके यहाँ नौकरी आदिकी. स्वतंत्र रहना हरियाणाके स्वाभिमानी अग्रवाल वैश्योंका प्रधान जातीय संस्कार रहाथा. राजस्थानके सामंती दौरमें वहाँके अग्रवाल-माहेश्वरियोंका गुण-संस्कार नौकरी आदिकी विवशता भोगनेकेलिए विवशरहगयाथा. यह चिंतनीय परवशताथी. आनंदका विषयहैकि कलकत्ता-बम्बईमें पहुँचकर राजस्थानके सभी वैश्योंने पूर्ण सक्षमबनकर स्वतंत्र रहनेका सर्वतोभद्र संस्कार बहुतशीघ्रही परिपुष्टकरनेमें एक चमत्कारही मानो प्रस्तुत करदियाथा . . .

श्रीनिवासजी अग्रवालने १५ वर्षकी आयुतक अपने पिताकेसाथ देवरालामेंही रहकर कामकाज सीखाथा और घरका दायित्व निभायाथा. बालपनमें आपको माताभी निकल आईथी, पर आप जल्दीही नीरोग होगयेथे. आपके दो वड़े भाई फूलचन्दजी और जुगल-किशोरजी अपने छोटे दादा और पिताके पदचिह्नोंपर चलतेहुए, दार्जिलिंग और कलकत्तामें मोहनलाल शिवलालकी उसी फर्मपर नियुक्त-होगयेथे, जहाँपर दो पीढ़ियोंसे इस परिवारने अच्छी वेतनभोगी सेवाकीथी. लेकिन जब श्रीनिवासजीने जीवनमें धनार्जनकी दृष्टिसे कलकत्ताकी यात्राकी, तो आपने निश्चयकरलियाकि जीवनमें नौकरी नहीं करेंगे. इसका एक सबल कारणथा. जिससमय सन् १९२४ में आपका जन्महुआथा. उससमय आपके पिताजीने कलकत्तामें मोहनलाल शिवलाल फर्मसे अपनेको दृढ़ मनोबलके आधारपर मुक्तकरलियाथा और यही निर्णय लियाथाकि यातो स्वतंत्ररहकर कामकरेंगे, नहीं तो वापस देशचलकर, देवरालामें कोई छोटीमोटी दूकानखोलकर जीवनयापनकरेंगे. पिताकी यही विरासत श्रीनिवासजीने जन्मसमयही माताके दुग्धपानके साथ प्राप्तकरलीथी ! जीवनमें यही विरासत आपका पथ नयेसेनये प्रकाशसे भरती आरहीहै . . .

जिससमय द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारंभहोगया और देशमें एक विचित्र हलचलहोनेलगी, उससमय सारेदेशमें सभी वस्तुओंके भावोंमें एक अकल्पनीय तेजीआनेलगी. कलकत्ता पहुँचकर आपने स्वतंत्ररहतेहुए, चांदीकी दलालीका काम शुरूकरदिया. दलालीका काम कठोर श्रम, अत्यधिक जागरूकता, पूर्ण शारीरिक क्षमता और व्युत्पन्नमतिकी अपेक्षारखताहै. स्वभावमें श्रीनिवासजी यद्यपि ग्रामीणोंजैसे पूर्ण सरलथे, लेकिन बुलंद इरादोंके आदमी तरुणावस्थामें होचुकेथे. व्यवहारमें आत्मीयताका पुटदेतेथे, दिनभरकी भागादौड़ीमें सांसलेना जानते न थे. युद्धकी सरगरमीकेकारण चांदीकी दलालीमें ऐसेही दलालकी आवश्यकता अधिक होनेलगीथी, जो हलकी कुदालकीतरह तेज नोकसे कड़ी सूखी धरतीको उथलपुथलकरदे और सही जगहपर बीजका रोपणकरदे. जल्दीही आपकी कठिन साधनाका फल सामने आया और आपने चांदीकी दलालीमें अपने दो पैर जमाकर खड़ाहोनेमें एक सफलता प्राप्तकरली. इसकाममें आपने लगभग डेढ़ वर्ष व्यतीतकिया. जैसेही सन् १९३९ आया, आपके ज्येष्ठ भ्राता फूलचन्दजीनेभी 'मोहनलाल शिवलाल' की कलकत्ता-गद्दीका काम छोड़दिया और आपके परामर्शको पसन्दकरतेहुए, आपको लेकर कालिम्पोंगमें एक मनिहारीकी दूकानकरली. इस दूकानको बैठानेमें सचमुचही अनेक असुविधाओं का सामना करना पड़ा. लेकिन संकल्प और लक्ष्यप्राप्तिका दृढ़मनोबल जहाँ हो, वहाँ सभी बाधायें मार्गावरोध नहीं करपातीं. कालिम्पोंगमें मनिहारीकी दूकान जमगयी और दोनों भाई इसकी विक्री और मालपूर्तिमें व्यस्तहोगये. स्वतंत्र काम चिंतायें अवश्य अधिकदेताहै, पर साथही समुचित प्रतीतिभी दियाकरताहैकि अब यह हमारा अपना कामहै. इसे बढ़ाओ, बड़ाकरो, इसमें हमाराही हितहै. दूकान जब नियमित लेवावेचीके दौरमें आगयी, श्रीनिवासजीने वड़ेभाईसे आज्ञालेकर देवरालाकी यात्राका कार्यक्रमबनालिया. दो वर्ष होगयेथे, पहली मुसाफरीमें देवरालासे वाहर आयेथे. घरपर पिताहैं, माताहै, नवपत्नीभीहै ! घरजातेसमय कमाऊ पूतने सभीकेलिए उपहार खरीदे. पहली कमाईमें पहले मातापिताके चरणोंमें शीश झुकाकर आशीर्वाद लियाजाये, फिर नवपत्नीकी मनुहार पूरीकरनेका सुखानंद ग्रहणकियाजाये . . . .

यह संतोषका विषय रहाकि जब श्रीनिवासजी गांव पहुँचे, तो उन्होंने माताका मुख देखलिया क्योंकि उनके पहुँचनेके कुछही दिनों वाद वे इसलोकसे विदाहोगयीं. दो पैसाकमाकर लायाहै, यह संतोष पिताको हुआ. अब वे वृद्धहोचलेथे, लेकिन गांवमें अपनी रीतिनीतिसे आत्म-निर्भर बनेहुए परम सुखका जीवन जीरहेथे. कुछही महीने वीतेकि वे भी अपनी इहलीला पूर्णकर, स्वर्गवासी होगये. उधर, कलकत्तामें बमबारी होगयीथी और उससे भगदड़ मचगयीथी. वरमासे जापानी फौज भारतकी तरफ अग्रसरहोरहीथी. फूलचन्दजीने ऐसे आसन्न संकट और दुश्चिंताओंके दौरमें पूरी दूकानही उठादी और जो कुछभी दूकान-सामानसे हाथलगा, समेटकर राजीखुशी वापस गांव पहुँचगये. भगदड़की अस्तव्यस्ततामें पहली सुरक्षा यहीहोसकतीथीकि परिवारकोलेकर अपने पैतृक ग्राममें बैठेरहें. महायुद्धके समाचार प्रतिदिन कोई न कोई हड़कंप, किसी न किसीप्रकारका आतंक प्रसारितकरतेरहतेथे. उनके कुछ प्रतिफल जनजीवनमें प्रचारितहोतेथे, वे अपना अलग क्लेश

फैलारहेथे. जीवनोपयोगी वस्तुओंका चिंतनीय अभाव बढ़रहाथा. महँगाई सुरसा राक्षसीकीतरह अपना मुंह अधिकसे अधिक खोले जारहीथी. इसी चिंतासे अपनी रक्षाकरनेकेलिए बिचलेभाई जुगलकिशोरजीभी देवरालामें लौटआये.

## ६. 'लोहाकाठ' माणसके पसीनेकी बूँदोंसे जब सौभाग्यके बीज न कलियासके

१९४२ जब राजीखुशी निकलगया, घरमें भाइयोंने तयकियाकि देवरालामेंही बैठकर गल्लेका काम कियाजाये. इधर भिवाणी, उधर लुहारू और तीसरी दिशा सिवाणी—ये तीन स्थान देवरालाके चारोंतरफ अनाजकी बड़ी मंडियोंकेरूपमें प्रसिद्धथे. १९४३ से काम तीनों भाइयोंने हाथसेहाथ जुड़ाकर शुरूकरदिया, तीनोंही अपनीअपनी जिम्मेदारियाँ बांटकर जुटगये. सबसे छोटेभाई श्रीनिवासजीने भागादौड़ीका भारसम्हाला. इस बिपारकेलिए दो ऊँट और एक घोड़ी खरीदीगयी. सुबह भोरमेंही एक ऊँटपर चढ़कर श्रीनिवासजी सिवाणीकीतरफ निकलजाते. सिवाणी देवरालासे १४ कोसपरहै. एक अच्छा ऊँट १४ कोस ५ घंटेमें पहुँचलेताहै. वहाँ मंडीमें पहुँचकर गल्लाखरीदते, अपने ऊँटपर उसे लदवाते, देर रातमें घर पहुँचते. रातको एक नींद लेते, पहलेदिनकेऊँटको आराम-करनेकेलिए छोड़ते, और दूसरे ऊँटपर माललदवाकर लुहारू लेजाते. देवरालासे लुहारूभी १४ कोसपरहीहै. सिर सूरजचढ़े लुहारू पहुँचते, वहाँ अपना अनाज बेचते, और फिर देररात चढ़े रुपयालेकर घर वापस आते. कैसा हर्ष और आनंद श्रीनिवासजीके जीवनमें व्याप्त-होगयाथा इस अबाधगति यात्रा-श्रमसे, कि उसकी उपमाकेलिए आकका स्मरणहोआताहै. जितनीही जेठ दुपहरीमें आकका फूल तपताहै, उतनाही खिलकर हंसताहै. श्रीनिवासजी जितनाही भागादौड़ीका श्रमकरतेथे, उनके अंगअंगसे उतनीही कान्ति फूटनेलगीथी और उतनीही चुस्ती व उमंग आपके अन्दरसे पुष्पपरागकीतरह बिखरकर बाहर आतीथी. घरपर दोनों बड़े भाइयोंकाभी यहीहालथा. फूलचन्दजीतो अब घरमें सबसेबड़ेरहगयेथे, उनका आदेश प्रमुखरहगयाथा. जुगलकिशोरजी घरकी व्यवस्थाभीकरते, विणज-विपारकी दूसरी जिम्मेदा-रियांभी संभालते. तीन भाइयोंके ६ हाथथे, तीनभाइयोंमें धावकका कठिनतर दायित्व संभालनेवाले श्रीनिवासजी रातदिन जागरणकरने-वाले 'लोहाकाठ' बनगयेथे. नारनौलकी साखीहै : 'पहलवान अखाड़ाको, लोहाकाठ चारूँकूँटकी धरतीको !" लोहाकाठ उस लकड़ीको कहतेहैं, जो सबसे कठोरहोतीहै और वजनमें सबसेभारीहोतीहै, चिराईमें बहुत कष्टदेतीहै. लोहाकाठ-सा इंसान पहलवानके अखाड़ेसेभी ऊपरके स्तरका कठिन पुरुषहोताहै, वह धरतीके जितने जंजाल सामने आतेहैं, उनको पछाड़नेकी कुव्वतरखताहै. भारतीय राजनीतिमें सरदार पटेलको 'लौहपुरुष' कहागयाहै. ब्रिटिशसत्ता द्वारा छोड़ीगयी असंभाव्य कल्पनाओंतकको उन्होंने अपने लौहसंकल्पोंसे विदीर्णकर-दियाथा. पर हमें यादरखनाचाहिएकि सरदार पटेलने राजपद पाकरही अपनी सफलतायें प्राप्तकीथीं. 'लौहकाठ पुरुष' अपने दैनंदिन जीवनकी अदृश्य विपदाओं-विभीषिकाओंतकसे जूझनेमें संकोच नहीं करता. हमें यादरखनाचाहिएकि इससमय सन् १९४३ में श्रीनिवासजीकी आयु मात्र १९ वर्षकीथी, लेकिन उनके अन्दर जूझनेकी, कठोर श्रमकरनेकी, दूरधावक बनकर प्रतिदिन ३०-४० कोसका सफर ऊँटकी पीठपर करनेकी, अटूट तमन्नाओंकी, और अपने बड़े भाइयोंके हुकुममें रहतेहुए मर्यादापालनकरनेकी कैसी चमकदमक पैदाहोगयीथी ! ग्रामीण लोकजगतने ऐसेही तगड़े मर्द-बेटेको लोहाकाठ इंसान नामदियाथा.

### अंग्रेजोंकी गुलामीका दौर, दिनदहाड़े डाकुओंका उत्पात और फुडकन्ट्रोलरोंकी निरंकुशतायें

लेकिन यह सारा श्रम और एकसांस कियागया बिपारबिणज, जल्दीही धूलमिट्टी बनगया. एकरात डाकुओंने देवरालामें डाका डाला और जोकुछभी कमाईका धनथा, वे सबकुछ लूटकर लेगये. तीनों भाइयोंके आगे एक घनघोर अंधकार छागया. अंग्रेजोंकी गुलामीका अंतिम दौर चलरहाथा और पुलिस व डाकू और सरकारी अहलकार तीनोंही एक रंग होचुकेथे. इसलिए गया हुआ धन लौटकर आयेगा, उसकी उम्मीद कैसे कीजासकतीथी. उपाय बस एकहीथा. वही तीनों भाइयोंने शिरोधार्यकिया. देवराला ग्रामकात्याग तीनोंने स्वीकार-करलिया. तीनों चलकर सपरिवार भिवाणी पहुँचे. यहाँपर सरकारी हुक्कामोंसे मिलकर गल्लेकी राशनिंग-व्यवस्थाका काम मिलगयाथा.

लेकिन सन् १९४४, ४५, ४६ ये तीन वर्षभी पसीनाबहानेमें बीते, कमाईका सिलसिला सरकारी अहलकारोंके तेवरोंपर वारफेर होतारहा. फुड-कंट्रोलरोंके तेवरोंने रहासहा मटियामेटकरदिया. कुछ बचाथा, वह फाटकेकी संक्रामक बीमारीसे लुटगया. बिपार-विणजकी ऐसी दुरवस्थादेखकर सबसे छोटेभाई श्रीनिवासजीने आखिर एक संकल्पलिया. पहलेतो दोनों बड़ेभाइयोंको पासबैठाकर उस लोटेमें हाथ डलवाया, जिसमें नमक रखागयाथा. उनसे कसम दिलवाईकि अब वे जीवनमें कभी फाटका नहीं करेंगे. फिर दूजा संकल्प यह लियाकि बड़े भाई फूलचन्दजीके साथ श्रीनिवासजी देवराला-भिवाणी-लुहारूके जीवनसे मोह तोड़ेंगे और कलकत्ता चलेंगे. बिचले भाई जुगलकिशोरने यह स्वीकार कियाकि वे देवरालामें रहतेहुए यहाँकी व्यवस्थासम्हालेंगे. श्रीनिवासजीका यह निर्णय जीवनका सही मोड़ बनगया. हरियाणा-पंजाब इससमयतक एकथे और बूरियोक्रैसीका आतंक महामारीके रूपमें व्याप्तथा. सबकुछ बहशीथा. उसको अंतिम प्रणामदेकर, सन् १९४७ के प्रारंभमें दोनों भाई कलकत्ता आगये. सन् १९४२, ४३, ४४, ४५, ४६ में बहायागया पसीना एकभी स्वप्न-बीजको न तो कलिया-सकाथा, न उनमेंसे एकभी पौधा बनसकाथा . . .

### पुनः चांदीकी दलालीसे जीवनचक्रकी निरापद, लेकिन भारवाही यात्रा प्रारम्भ

श्रीनिवासजी सन् १९४७ के प्रारंभमें जब कलकत्ता आये, उससमय परिवारपर लगभग ६० हजारकी देनदारी रहगयीथी. तीन भाइयोंमें सबसे छोटेहोनेकेकारण, यह अंशांशका भार उनकोभी दुस्सह्य बनरहाथा. आपने दत्तचित्तहोकर पुनः उसी कार्यक्षेत्रमें अपनेको

व्यस्तकरलिया, जिसमें ५ वर्ष पहले आप सुबहसे शाम लगेरहतेथे : चांदीकी दलाली. कुछ पुराने लोग अभीभी इसी क्षेत्रमें बैठेहुएथे, कुछ नयोंसे आपने विनयभावसे जानपहचान निकालली. आपने सिरपर जो कर्ज देवराला-भिवाणीका रहगयाथा, उसको लक्ष्यसाधकर कृत-संकल्प हुएकि जबतक कर्जहै, तबतक आप सिर्फ एकसमय भोजनकरेंगे ! लक्ष्यसाधनसेही उसका लक्ष्यभेद होसकेगा. जब कृतसंकल्पहोगये और एकसमय भोजनकरनेलगे, तो आपका हठी दिल इसबातकेलिएभी दृढ़प्रतिज्ञ होगयाकि अधिकसेअधिक कठिन मेहनतकीजाये, और जोभी दो पैसा बचासकें, उसे कर्ज-उतारनेकी मदमें डालतेरहें. इस व्रतमें जीवनके जोभी आराम, मौजबहार, मनोरंजनके निमित्त अतिरिक्त व्ययहोसकताथा, उससे भी आप उदासीनहोगये . . .

## ऋण-पूर्ति, लोहा और मशीनरीके व्यवसायमें हाथ

सन् १९४७ बीता, १९४८ बीतगया, १९४९ जब बीतनेलगा, परिवारके सिरपरसे कर्जका भार उतरचुकाथा. इस कर्जके उतारनेके संकल्पमें दोनोंही बड़े भाइयोंनेभी अपना स्तुत्य योगदानदियाथा. आपको पहलीबार एक असीम आनंद प्राप्तहुआथा. आपको यह सुखद अनुभूतिहुईकि जैसे बेड़ियोंसे जकड़ाहुआ शरीर अब पूर्ण मुक्तहोगयाहै, अब आप आजादहैं : उसीतरह आजाद, जिसतरह देश आजाद होगयाहै !

१९४९ सेही, ऋण-पूर्तिहोतेही, आपने अपना कार्यक्षेत्रबदललिया. लोहे और मशीनरीका काम प्रारंभकरदिया. इसमें बड़े दोनों भाईभी अपना वरद् हस्तलेकर साथरहे. एकदो साझीदारभी थोड़ा-बहुत समयतक साथरहे. १९५१ में इसीकामका विस्तारकरतेहुए लिलुआमें जी.टी.रोडपर मालरखनेकेलिए एक गुदाम बनालिया और यहींपर जीवनका स्थायी रैनबसेराभी चिनवालिया. और, इस व्यवसायमें आप पूरे १२ वर्षतक, सतत जागरण करतेहुए, उसीतरह जुटेरहे, जिसतरह देवरालामें रहतेहुए, गल्लेके व्यवसायमें अपनेको जोते रहतेथे. दूरपासकी यात्रायें, जड़ मशीनोंसे माथाफोड़ी और उनको प्राण-संचालनकी रूपरेखा देनेकेलिए जीतोड़ हाड़-फोड़ी. बड़े भाईका नियमित संरक्षण. काम बढ़तागया, सामाजिक संरक्षणके नयेनये दायित्व सामनेआतेगये और इसरूपमें सामाजिक प्रतिष्ठाका सूर्योदयही नहीं होगया, हवड़ा और कलकत्ताके हरियाणाके समाजमें पूरे देवरालिया परिवारका मान-सम्मान समृद्धिपानेलगा. सार्वजनिक और सामाजिक चंदोंकी उगाहीकेसमय जबभी आपकेसामने प्रस्ताव आये, आपने अपनी सहमतिदेकर बड़े भाईकेपास उन प्रस्तावोंको भिजवादिया. १९५८ में पहले जी.टी. रोडपर 'नारायणी-निवास' खरीदागया, जिसमें दोनों भाइयोंका आवास रहा, बादमें आपने अपनेलिये इसी निवासकेपास अपना स्वतंत्र निवास-भवनभी चिनवालिया. दस वर्षका और समयबीता. इसबीच देशमें लोहेका, मशीनरियोंका नया युग आचुकाथा. डिस्पोजलमें भारी मशीनोंकी नीलामीका दौरभी अपना नया रंगलायाथा. ट्रेक्टरोंकी लेवाबेचीका एक नया धंधा स्थापित-होचुकाथा.

## परिवार-विभाजन, परिवार-एकता

सारा व्यवसाय आखिर एक समुन्नतस्तरपर आगया. सन् १९६८ में यह निश्चयकियागयाकि अब तीनों भाई व्यापारमें बंट-वाराकरलें. सबका अपना बड़ा परिवार होचुकाथा, सबके अपने जवान बेटे अलग धंधाकरनेलगेथे. जवान बेटोंके और विवाहयोग्य कन्याओंके विवाहभी होचुकेथे. बंटवारातो होगया, लेकिन पारिवारिक एकताको देखतेहुए, तीनों भाई एकही रहे. सबसे जेठेभाई फूल-चन्दजीका आदेशही बाकी दोनोंकेलिए शिरोधार्य बनारहा.

**चतुर्थ अध्याय**

# नईदिल्लीके राष्ट्रीय क्षेत्रोंमें सर्वप्रिय मित्रताका साथी

## १०. कर्म-प्रधान जीवन, मित्रता-प्रधान जीवनदर्शन

पूरेदेशकी प्रगति उसकी पंचवर्षीय योजनाओंके इर्दगिर्द केन्द्रीयभूतहोतीरहीहै. समग्र व्यापार और उद्योगोंका वितरण-केन्द्र व योजना-नीतियोंका संचालन-स्रोतभी इन्हीं पंचवर्षीय योजनाओंके परिपार्श्व बनतेरहेहैं. यहीकारणहैकि केन्द्रीय सरकारके कार्यालयोंने राष्ट्रीय प्रगतिकी धाराओंको नईदिल्लीमें, शिवजीकी जटाकीतरह बंधीहुई, मिनिस्ट्रियोंकी भवन-पंक्तियोंमें इसतरह स्थिर करदियाहैकि पहले वे वहाँ अवतरणकरें, उसकेबाद उनका सिंचन-पोषण निश्चितकी हुई शाखाप्रशाखाओंमें प्रवाहितहोनेका सिलसिला प्रारम्भहो. श्रीनिवासजीने ट्रेक्टरोंका और भारी मशीनोंका जो व्यापार प्रारम्भकियाथा, वह अकेले कलकत्तामें बैठकर साध्य नहीं होसकताथा. उसकेलिए दिल्लीका नियमित सम्पर्क आपकेलिए सर्वप्रधान तथ्य बनगयाथा. अतः आपने सन् १९६१ सेही के. ट्रेक्टर स्पेअर पार्ट्स नामसे दिल्लीमें एक अच्छी दूकान स्थापितकरदी और आप नियमितरूपसे दिल्ली-नईदिल्ली जानेलगे. इधर हरियाणा राज्यका गठन होगयाथा, और यह स्वाभाविकहीथाकि राष्ट्रीय क्षेत्रोंमें हरियाणाके प्रतिभावान युवकगणभी अब नईसक्रियतालेकर सामनेआयें. अब श्रीनिवासजी ने कलकत्ता और नईदिल्ली इन दो नगरोंके बीच अपना जीवन सक्रिय बनालियाहै ; कलकत्तामें आपका एक अलगरीतिका सामाजिक जीवन है, नई दिल्ली पहुंचनेपर आपने जीवनका एक दूसरा लक्ष्य निर्धारितकरलियाहै.

## व्यापार-व्यवसाय एवं राष्ट्रीय नीतियाँ

आपका व्यापार-व्यवसाय एक निश्चित दिशामें मंथरगतिसे आगेबढ़रहाथा. लेकिन राष्ट्रीय नीतियां व्यापारको और उद्योगों-को और देशकी कृषिको किसतरह भिन्नभिन्नसमयोंपर प्रभावितकरतीरहेंगी, यह अध्ययन आपकेलिए अब गंभीर विषयबनगया और प्रधान चिंतनरहगया. दूसरा लक्ष्य आपने यह निर्धारितकरलियाकि हरियाणाराज्यके जन्मकेसाथही, अब यह उचितसमयहैकि जितनेभी छोटेबड़े दायरेमें हरियाणाकी सेवाहोसके, यथासामर्थ्य-यथाशक्ति कीजाये. और, सेवाक्षेत्रमें जितने अच्छे मित्र बनायेजासकें, उनका साहचर्य प्राप्तकियाजाये. आजादी मिलनेकेबादसे, नईदिल्ली सारे देशकी रक्त-धमनियोंको रक्त पहुंचानेवाला एक विराट हृदय बनगयाथा. इस प्रक्रिया-समुच्चयकरणके दीर्घ सिलसिलेमें विभिन्न राज्योंके अधिवासियोंकी भीड़सी एकत्रहोगयीथी और उस भीड़में अच्छे मित्र ढूंढ़नेका काम सहज नहीं था. हरियाणाके हजारोंहजार लोग नईदिल्लीकी राजकीय सेवाओंमें पहुंचचुकेथे, हरियाणा राज्यसे निर्वाचित संसद्-सदस्य भी नईदिल्लीमें आकर एक नई चहलपहलके कारण बनगयेथे. श्रीनिवासजी सहजभावसे इस नई चहलपहलमें और नईदिल्लीके उच्चस्तरीय जनजीवनमें भागलेनेलगे, राष्ट्रपतिभवनमें आयोजितहोनेवाली १५ अगस्तकी सर्वप्रिय संगोष्ठीके एक निमंत्रित सदस्यबननेलगे. धीरेधीरे आपको यह अनुभव होनेलगाकि अकेले हरियाणाके जनप्रतिनिधियोंसे परिचितहोनेमेंही आनंद नहींहै, देशके विभिन्न राज्यों से जो जनप्रतिनिधि भारतीयसंसद्में चुनेगयेहैं, उनमेंभी विभिन्न विषयोंके और क्षेत्रोंके श्रेष्ठ व्यक्तिहैं, वेभी आनंदप्रिय मित्र बनानेकेलिए सत्पात्रहैं. तो आपने उसदिशामें भी एक व्यस्तता कायमकी. इसतरह आपका जीवनदर्शन परिपुष्टहोतागया.

## राजनीतिकी संप्रीति, राजनीतिज्ञोंकेप्रति आस्था

श्रीनिवासजीके व्यक्तित्वमें नईदिल्लीकी इन गतिविधियोंने एक नया संस्कार समुपस्थित करदियाहै. आपका विनयभाव हृदय-स्पर्शी बनचुकाहै, आपकी मधुर मुस्कान आपके हृदयके सत्यभावको प्रदर्शितकरनेलगीहै. प्रगाढ़ मैत्रीमें आपकी निष्ठाहै. मित्रोंके दुख-सुखमें आप साथरहनेमें विश्वासकरतेहैं. राजनीतिमें आप स्थान नहीं चाहते, लेकिन राजनीतिकी जो संप्रीति जनजीवनमें प्रसारितहो, उसमें आप अपना भरापूरा योगदानदेनेकेलिए लालायितरहतेहैं. आधुनिक भारतके आप सचमुचही सत्य पुत्रबनें, यह आपकी हार्दिक लालसाहै. यही आपका गन्तव्यभीहै.

आपका जीवन सदाही सादारहाहै. सिरपर एक गांधी टोपी, खद्दरका एक कुर्ता और धोती, गरमियोंमें एक जाकेट और सर-दियोंमें एक सादा ऊनी कोट—बलिष्ठ शरीरपर आपकी यह भूषा आपका स्थायी परिचयबनचुकीहै. राष्ट्रपतिसे लेकर प्रधान मंत्री और अन्य केन्द्रीय मंत्रियोंसे मिलकर आपने अनेक राष्ट्रीय मंत्रोंको ग्रहणकियाहै.

## पितृभूमि देवरालामें जनकल्याणके लिए निर्माणका दीर्घ सिलसिला

अब तीन भाइयोंमें जुगलकिशोरजी नहीं रहे. जबतक वे रहे, तब उनकेसाथ मिलकर, आपने और आपके बड़े भाई दोनोंने मिलकर देवरालामें काफी ऐसा निर्माण करवायाहै, जो ग्रामवासियोंकेलिए समर्पितरहाहै. गांवके बीचोंबीच आपकी जो हवेलीहै, वह प्राय: आगत अतिथियोंकेलिए एक स्थायी अतिथिनिवास बनकर रहीहै. इसमें पंजाब-हरियाणा जब संयुक्त राज्यथा, तब उसके तत्कालीन मुख्यमंत्री सरदार प्रतापसिंह कैरों आकर ठहरचुकेहैं. हरियाणाके मुख्यमंत्री जबसे बंशीलालजी बनेहैं, तबसे कईबार अपने प्रवासके दौरान इस हवेलीमें अतिथिरहचुकेहैं. सन् १९६० में जब गांवमें ग्रामवासियोंके सहयोगसे हाई स्कूलका भवनबननेलगा, तो आप तीनों भाइयोंने मिलकर इसमें एक अच्छा अनुदानदियाथा. १९६० में आप तीनों भाइयोंनेही मिलकर अपने पिताकी स्मृतिमें 'सोहनलाल सिविल हॉस्पिटल' बनवायाहै. इसका उद्‌घाटन सरदार प्रतापसिंह कैरोंने कियाथा. इसे अब हरियाणा सरकारने अपने संचालनमें लेलियाहै, लेकिन इसका भवन आपलोगोंने बनवाकर दियाहै. इसमें औजार आदिभी आपलोगोंके अनुदानसे आयेहैं. हवेलीकेसामने एक बड़ा अतिथिनिवासहै, इसमें विवाहशादीकेलिए इतना बड़ा वस्तुभंडारहैकि एकसाथ ५ बारातोंका काम चलसकताहै. इसमें पानीका बड़ा टांकाहै, जो पेय जलकी समस्याका एक समाधान प्रस्तुतकरताहै. आपके पिताजीने गांवमें सबसेबड़ा कुआं बनवायाथा, लेकिन उसका विस्तीर्ण चौतरा और उसपर मूंगीपाकी मढ़ीका निर्माण आप तीनों भाइयोंने करवायाहै. बिचले भाईके स्वर्गवासकेबाद, उनकी स्मृतिमें अस्पतालकेपासही आपने अपने बड़े भाईकेसाथ मिलकर १९७४ में 'जुगलकिशोर सेवासदन' नामसे एक धर्मशालाभी बनवादीहै,और इसतरह गांवके एक बड़े अभावकी पूर्तिकरदीहै. अब आपलोगोंका बड़ा मनहैकि देवराला ग्राममें एक कृषि कॉलेजकी स्थापनाहो. इसकेलिए आप एक बड़ा अनुदानभी अपने बड़ेभाईकेसाथ मिलकर देनेकेलिएतैयारहैं. हरियाणासरकारसे इसविषयमें बातचलरहीहै.

## पुत्रोंका-पुत्रियोंका आनन्दवर्धक विवाह

बड़े भाई फूलचन्दजी देवरालियाके सुपुत्र परमानन्दजीका विवाह रावतमलजी सरावगीकी सुकन्या पुष्पादेवीसे हुआहै. इस-समय ये तीन पुत्र आनंदकुमार, प्रसन्नकुमार और प्रमोदकुमारके पिताबनचुकेहैं. श्रीनिवासजीके ४ पुत्रहैं. सबसे बड़े कृष्णानन्दजीका विवाह हरिप्रसादजी धनसार-निवासीकी कन्या पुष्पा देवीसे हुआहै. हरियाणामें धनसार इन्हीं लोगोंका बसायाहुआहै. कृष्णानंदजीके इससमय २ पुत्रहैं : अरुण, अनुज, और एक कन्या शालिनीहै. श्रीनिवासजीके शेष ३ पुत्रोंके नामहैं : विजयकुमार, शरद् और मनोज.

फूलचन्दजीकी ५ कन्यायें हैं. गीताबाईका विवाह इन्द्रपालजी मातनहेलियासे हुआहै. चन्दाबाईका विवाह दुलीचन्दजी ससीबारियासे हुआहै. शेष दो कन्यायें हैं मोहनीबाई और सम्पतीबाई. श्रीनिवासजीकी बड़ी कन्या लीलावतीका विवाह दिल्लीमें ओमप्रकाशजी बंसलके पुत्र महेन्द्रकुमारजीसे हुआहै. छोटीकन्या सरिताहै.

## राष्ट्रीय नेताओं द्वारा बधाईके पत्र और तार

यह हर्षका विषयहैकि सन् १९७१ में, आपकी ज्येष्ठकन्या लीलाके विवाहमें एक बड़ीधूमधामरही. इस अवसरपर आपको शुभ कामनाओंवाले तार और बधाईकेपत्र बड़ीसंख्यामें प्राप्तहुए. यह इसतथ्यका प्रमाणथाकि आपके मित्रोंकी और परिचित बांधवोंकी संख्या किससीमातक पहुंचचुकीहै. इसीअवसरपर केन्द्रीय राज्य सभाके सदस्य श्रीकृष्णकान्तजी, राज्यसभाके सदस्य श्री के. एल. एन. प्रसादजी, केन्द्रीय राज्यकृषिमंत्री श्रीअन्नासाहेब पी. शिन्देजी, संसद्सदस्य मनुभाईजी शाह, राष्ट्रपति वी. वी. गिरि महोदय, उपराष्ट्रपति श्रीजी. एस. पाठक महोदय, संसद्सदस्य श्रीवी. शंकरजी गिरि, केन्द्रीय रक्षा मंत्री श्रीजगजीवनराम महोदय, केन्द्रीय औद्योगिक विकास व अंतर्राज्य व्यापार मंत्री, केन्द्रीय उपमंत्री सिंचाई व विद्युत श्रीसिद्धेश्वरप्रसादजी, केन्द्रीय राज्यमंत्री रक्षाविभागीय उत्पादन श्री पी. सी. सेठी महोदय, हरियाणाराज्यके मंत्री श्री अब्दुल गफ्फार, केन्द्रीय राज्यमंत्री संसद्कार्य श्री ओम मेहता, केन्द्रीय गृहकार्य विभाग मंत्री श्री के. सी. पंत, अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटीके जनरल सेक्रेटरी और संसद्सदस्य श्रीश्यामधर मिश्र, केन्द्रीय स्वास्थ्य व परिवारनियोजन मंत्री श्री के. के. शाह, संसद्सदस्य श्रीत्रिगुणा सेन, अध्यक्ष महानगर परिषद, दिल्ली, श्रीश्यामचरण गुप्ता, संसद्सदस्य श्रीभगवतदयाल शर्मा, हरियाणाराज्यके राज्यपाल श्री बी. एन. चक्रवर्ती महोदय, हरियाणाराज्यके मुख्य मंत्री श्रीवंशीलाल महोदय, हरियाणा राज्यके मंत्री सरदार हरपालसिंहजी आदिने अपनी भूरिभूरि बधाइयां प्रेषितकीं.

*** *** ***

हरियाणाके वरद् पुत्र और संकल्पोंके धनी श्रीनिवासजी अग्रवालको हमारा आदर और अभिनंदन. आप लोकजगतमें अपनी सेवाओंका क्षेत्र निरन्तर विस्तृतकरतेरहें, इसी शुभकामनाकेसाथ प्रणाम.